हिन्दी मासिक

# सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

दिसम्बर, 2003 वर्ष 2 अंक 10

–: सम्पादक :–
डा० हारून रशीद सिद्दीकी

– सहायक –
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2741235
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

## मुसलमान

मुसलमान न रहे तो सत्य को बुलन्द करने वाले और मानव में मानवता पैदा करने वाले भी न रहेंगे।

(मौलाना अली मियां)

सहयोग राशि

| | |
|---|---|
| एक प्रति | रु० 9/– |
| वार्षिक | रु० 100/– |
| विशेष वार्षिक | रु० 500/– |
| विदेशों में (वार्षिक) | 25 यूएस डालर |

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिस सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ–226007

अगर इस गोले में लाल निशान है तो आपका वार्षिक चन्दा समाप्त हो चुका है। कृपया अपना वार्षिक चन्दा जल्द भेजिए।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिस सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

# विषय एक नज़र में


- हिन्दी में उर्दू शब्द
- क़ुर्आन की शिक्षा
- प्यारे नबी की प्यारी बातें
- इस्लाम एक परिचय
- क्या इस्लाम तलवार से फैला
- बच्चियों की तालीम
- जिन्नात का परिचय
- औरतों की आज़ादी के नाम पर धोखा
- आप की समस्याएं और उनका हल
- स्वीकार नहीं
- नास्तिक और अंधविश्वास
- त्याग एवं दानशीलता के उच्च नमूने
- मां का दूध
- मेरे जीवन के अनुभव का निचोड़
- हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम
- हज़रत इमाम सुफियान सौरी
- क्या आप अच्छे बाप हैं
- उर्दू पुस्तक हक़ीक़ते मौत का परिचय
- परामर्श प्रस्तुत है
- मानवता को इस्लाम का पैग़ाम
- बच्चे की उपेक्षा नकारात्मक भाव जगाती है
- बालगीत
- शीत-ऋतु
- नातों और रिश्तों का महत्व
- हकीम सुक़रात
- मदरसों का उद्देश्य

सम्पादकीय.....3
मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०) ..... 5
मौलाना सय्यद अ़ब्दुल ह़यी ह़सनी ..... 6
मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली हसनी ..... 7
आमिना उस्मानी ..... 11
खैरुन्निसां बेहतर..... 14
अबू मर्गूब ..... 15
सादिक़ा तस्नीम फ़ारूक़ी ..... 16
मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी ..... 18
कारी हिदायतुल्लाह सिद्दीकी..... 19
इदारा ..... 20
डॉ० मु० इज्तिबा नदवी ..... 22
सादिक़ा तस्नीम फ़ारूक़ी ..... 24
मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी..... 26
माख़ूज़ ..... 27
मायल खैराबादी..... 28
.....29
इदारा ..... 31
सग़ीरा बानो ..... 32
सै० सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान ..... 33
एम०एस०एन० ..... 35
रमेश आज़ाद ..... 36
भानुदत्त त्रिपाठी..... 36
मुफ्ती स० अब्दुर्रहीम लाजपुरी..... 37
इदारा ..... 39
मु०सरवर फ़ारूक़ी नदवी ..... 40


❑❑❑

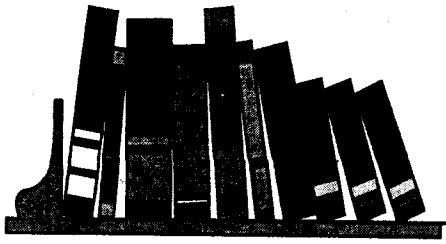

# हिन्दी में उर्दू शब्द

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

उर्दू मेरी मात्र भाषा है तो हिन्दी राष्ट्र भाषा। स्वतंत्रता से पहले तक हिन्दी, उर्दू की छोटी बहन थी परन्तु राष्ट्रभाषा बनते ही उसे बड़ी बहन का ताज मिल गया। मैंने तो अपनी सेवा का मैदान मात्र भाषा ही को बनाया था। इसी में लिखना, इसी में पढ़ना और इसी का पढ़ाना अपना पेशा बनाया।

सेवा की रुचि ने पहले निःशुल्क पढ़वाया परन्तु १९५५ ई० से पढ़ाई की नौकरी कर ली। उस समय किसी सरकारी नौकरी द्वारा उर्दू की सेवा सम्भव न थी अतः मैंने दीनी मकतब की नौकरी ली जहां उर्दू के साथ साथ धर्म सेवा (दीनी खिदमत) भी थी। पहले मैं दीहात के मदरसे में रहा, सन १९६० ई० में नदवा आ गया जहां १९९८ में हेड मास्टर के पद से रिटायर होकर अब भी इक्स्टेन्शन पर चल रहा हूं।

इस अध्यापन कार्य के साथ साथ मैं पत्रकारिता से भी जुड़ा रहा। उर्दू मासिक पत्र "रिज़वान" से मेरा सम्बन्ध स० १९६२ से सन १९७८ तक १६ वर्ष रहा। उसके योग्य एडीटर जनाब मौलाना मुहम्मद सानी हसनी (रह०) के संरक्षण में उस का प्रबन्ध भी देखता और उसमें लिखता भी था। मुझे मौलाना ने जर्नलिस्ट का प्रमाण पत्र भी प्रदान किया। १९७८ के अन्त में कई मास तक मैं ने "तामीरे हयात" का मैनेजमेंट भी संभाला था जब उसके एडीटर श्री इस्हाक़ जलीस नदवी थे।

हिन्दी भाषा से मेरा गहरा सम्बन्ध सन १९६८ ई० में हुआ था जब पं० नन्दकुमार अवस्थी जी ने अपने हिन्दी कुर्आन के संशोधन का कार्य मुझे सौंपा था यह लम्बा काम था जो कई वर्ष तक चला। यह कहे बिना नहीं रहा जाता कि पंडित जी ने कुर्आन की सेवा में एक अनोखा कार्य किया है कि उन्होंने कुर्आन के अरबी मूल को हिन्दी लिपी में लिख दिखाया, उन्होंने अरबी के विशेष अक्षरों के लिए हिन्दी अक्षरों पर बिन्दियों का प्रयोग करके उनकी अरबी ध्वनि नियुक्त की। शरअी दृष्टिकोण से इस का जो भी हुक्म हो लेकिन है यह एक कारनामा। उसके पश्चात मैंने सरशार के फसान–ए–आजाद की हिन्दी का संशोधन किया जिस में कई हज़ार पृष्ठ हैं। उर्दू हिन्दी लुग़त का काम भी किया। यह सभी कार्य पं. नन्दकुमार अवस्थी जी की भुवन वाणी ट्रस्ट द्वारा हुए।

शब्दों के शुद्ध उच्चारण की मेरी आदत तो विद्यार्थी जीवन ही से रही फिर जब अध्यापक हो गया तो जान बूझ कर किसी शब्द का अशुद्ध उच्चारण कैसे पढ़ा सकता था। परन्तु जब उर्दू हिन्दी शब्द कोष पर काम किया तो इस आदत में और तीव्रता पैदा हो गई।

हमारे उर्दू भाषी भाई जब किसी शब्द का अशुद्ध उच्चारण करते तो मुझ से रहा न जाता और मैं उनसे उनके सम्मान के साथ उस शब्द का शुद्ध उच्चारण पूछ लेता, जैसे ख़्याल, ख़तम, सिम्त, ज़्यादा, ग़ल्ती, मुहब्बत, क़याम, क़यामत, फ़िज़ा, ज़िबह, हर्कत, शर्फ़, रम्ज़ान, जमादिल अव्वल, जमादिल आख़िर फ़रिश्ता आदि कि इन सब के शुद्ध उच्चारण कर्म से इस प्रकार हैं। ख़याल, ख़त्म, सम्त, ज़ियादा, ग़लती, महब्बत, क़ियाम, क़ियामत, फ़ज़ा, ज़ब्ह, हरकत (र गतिशील), शरफ (र, गतिशील), रमज़ा, (म, गतिशील), जुमादल ऊला, जुमादल उख़ा, फ़िरिश्ता।

उर्दू, फ़ार्सी और अ़रबी तीनों भाषाओं की लिखावट में अक्षर की ह़रकत बताने के लिए ज़बर ज़ेर और पेश हैं परन्तु सामान्यतः यह लगाए नहीं जाते। कभी किसी अक्षर पर कोई ह़रकत लगा भी दी जाती लेकिन हर अक्षर पर ह़रकत लगाना दोष समझा जाता है। उर्दू, फ़ार्सी, और अ़रबी जानने वाले अपनी योग्यता से शुद्ध पढ़ते हैं। परन्तु जिस में योग्यता नहीं होती वह उसे ग़लत भी पढ़ सकता है जैसे शब्द سمت है इसको अनेक प्रकार से पढ़ सकते हैं समत, समित, समुत, सम्त, सिम्त, सुम्त, सिम्त, सुमुत जबकि शुद्ध केवल सम्त है। हिन्दी में ऐसा नहीं है। यहां हर ह़रकत के लिए एक मात्रा निश्चित है। हिन्दी में भी गतिहीन (साकिन) अक्षरों के लिए हलन्त लगाते हैं पर इस के लगाने का रिवाज नहीं है जैसे झटपट, खटपट, सरपट कि इन शब्दों में दूसरे और चौथे अक्षर गतिहीन हैं और बिना हलन्त के लिखे पढ़े जाते हैं।

मुसलमानों की संगत से हमारे हिन्दी भाषी भी अपनी निजी बोल चाल के सैकड़ों शब्द अ़रबी फ़ारसी के बोलते थे। चुनानचे जब हमारे सम्मानित हिन्दी लेखकों और कवियों ने अपनी रचनाओं में अ़रबी फ़ार्सी के शब्द प्रयोग किये तो बहुतों ने ذ ز ض ظ के लिए ज के नीचे बिन्दी लगा कर, ज़ लिखा। इसी प्रकार غ ف خ ق के लिए क़, ख़, फ़, ग़ लिखा परन्तु ح और ع की ओर ध्यान न दिया गया। कुछ कठिनाइयां भी थीं। ह के नीचे बिन्दी देने में तो कोई कठिनाई न थी किन्तु अ के कई रूप थे इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ। कुछ लोगों ने ع के लिये इन सब अक्षरों के नीचे बिन्दी लगा दी तो कुछ लोगों ने अ़ ही को आधार मान कर उस में मात्राएं लगा दीं और अ़, आ़, अ़ि, अ़ी, अ़ु, अ़ू, अ़ै, अ़ौ, लिखा।

मैं तो उर्दू का आदमी हूं और उस का सेवक उर्दू को उस की लिपी को छोड़ कर किसी और लिपी में उर्दू लिखने को उर्दू से शत्रुता जानता हूं परन्तु उर्दू में प्रयोग होने वाले अ़रबी, फार्सी, के शब्दों को हिन्दी में समोने को उर्दू की प्रियता का प्रमाण मानता हूं। निःसन्देह पुराने लेखकों तथा कवियों का यह उपकार है कि उन्हों ने उर्दू के शब्दों को अपनी रचनाओं में प्रयोग किया। यह उनका उपकार भी था और उनकी आवश्यकता भी कि जिस समाज के लिए उनकी रचनाएं थीं उसमें ऐसी ही रचनाओं की आवश्यकता थी।

अ़रबी, फ़ार्सी में भी दूसरी भाषाओं के शब्द मुअ़र्रब (अ़रबी बना लेना) व मुफ़र्रस (फ़ार्सी बना लेना) होकर प्रचलित हैं। इसी प्रकार हिन्दी में भी अ़रबी, फार्सी के शब्द मुहन्नद (हिन्दी बना लेना) होकर प्रचलित हैं तथा हिन्दी साहित्य में स्वीकृत प्राप्त हैं। परन्तु, इस का यह अर्थ तो नहीं लिया जा सकता कि मौलाना आजाद के मुकद्दर को मौलाना आज़ाद का मुक़द्दर न कहा जाए।

मेरे निकट उर्दू सेवा के विभागों में एक महत्वपूर्ण विभाग यह भी है कि हिन्दी भाषा में प्रयोग होने वाले उर्दू शब्दों को उनके शुद्ध उच्चारण से प्रयोग करने की योजना चलाई जाए। मैं ने इस सिलसिले में कई लोगों से परामर्श किया कुछ लोगों ने मेरा विरोध भी किया और कहा कि हिन्दी में उर्दू के जो शब्द जिस इम्ला और उच्चारण के साथ स्वीकृति प्राप्त कर चुके हैं उन्हें न बदला जाए जब कि बहुत से लोगों ने कहा कि जो उर्दू के शब्द पहले से हिन्दी साहित्य में बिगड़े रूप में प्रयोग हो चुके वह अपनी जगह ठीक हैं। नये साहित्य में कोशिश की जाए कि शुद्ध शब्द लाए जाएं फिर साहित्य में यदि पूर्णतया संशोधन न हो सके तो कोई ह़रज नहीं लेकिन धार्मिक (इस्लामिक हिन्दी) लेखों में उर्दू के अशुद्ध शब्द लिखने बोलने की अनुमत कदापि न हो। मैंने बहुत से उदाहरण भी प्रस्तुत किये कि अक्षरों में अंतर न करने से कभी ग़लत अर्थ समझा जाएगा जैसे – अलम–दुख, अ़लम–झण्डा, हाजी–बुराई करने वाला, ह़ाजी–ह़ज करने वाला, खार–नमकीना, ख़ार–कांटा, जलील – बुज़ुर्ग, ज़लील–तुच्छ, कमीना, गाली–बुरीबात, ग़ाली–मंहगा, कल्ब–कुत्ता, क़ल्ब–दिल आदि।

# क़ुर्आन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

## बातचीत का तरीक़ा :

वक़ूलू लिन्नासि हुस्ना । (अलबक़रा : ८३) और लोगों से अच्छी बात कहो।

इस आयत से मालूम हुआ कि आपस में जब बातें की जाएं तो अच्छी बातें की जाएं, अच्छे अन्दाज़ से हों। बोलने का लहजा नर्म हो। बात में सख़्ती न आने पाए। जिस से बातें की जाएं उसके मर्तबे (पद) का लिहाज़ रखा जाए। बड़ों से अदब के साथ और छोटों से महब्बत और प्यार के साथ बात चीत करना चाहिए। जबान से ऐसी बात न निकाली जाए जिससे किसी पर तअ़न (व्यंग) हो या किसी का अपमान हो। खुदा फ़रमाता है :—

"और न तुम आपस में एक दूसरे को तअ़न दो न चिढ़ का नाम लेकर पुकारो।" (हुजुरात : ४४)

हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "मुसलमान न तअ़ना देता है न लानत भेजता है और न बद ज़बानी करता है।" फ़रमाया :

"जो अल्लाह और कियामत के दिन पर यकीन रखता है वह बोले तो अच्छी बात बोले नहीं तो चुप रहे।"

हज़रत हाशिम बिन हिशाम ने हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कहा कि कोई ऐसी चीज़ बताइये जिस का मैं पाबन्द हो जाऊं। हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ज़बान की तरफ इशारा कर के फ़रमाया कि इस को क़ाबू (नियंत्रण) में रखो। और फ़रमाया : अच्छी बात भी सदक़ा है। बेशर्मी की बातों से बचना चाहिए। इन्साफ़ और सच्चाई की बात करना चाहिए, बात में जल्दी न करना चाहिए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इस तरह ठहर ठहर कर बात चीत करते थे कि अगर कोई शख़्स आप के शब्द गिनना चाहता तो गिन सकता था।

जब कुछ लोगों के सामने बात कही जाए तो सब की ओर ध्यान रहे। ठहर ठहर कर हर एक की ओर मुंह किया जाए ताकि दूसरों को शिकायत न हो।

बात चीत संक्षिप्त शब्दों में करना चाहिए। हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुझ को आदेश दिया गया है कि मैं संक्षिप्त बात करूं क्योंकि संक्षिप्त बात चीत अधिक अच्छी होती है।

औरतें जब ग़ैर मर्दों से बोलें तो उनके लहजे में लोच न हो।

बात नर्म आवाज़ में की जाए बिना ज़रूरत चिल्ला कर बात करना मूर्खता है। कुर्आन में है :

और अपनी आवाज़ धीमी कर कि सब आवाजों में बुरी आवाज़ गधे की है। (३१:१६)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बात चीत बहुत मीठी होती थी आप बहुत ठहर ठहर कर बात चीत किया करते थे।

## सलाम का अदब :

और (ऐ मुसलमानो !) जब तुम को सलाम किया जाए तो तुम उस (सलाम) से अच्छे अन्दाज़ में सलाम का जवाब दो या वैसा ही जवाब दो। (४:८६)

मुसलमान जब एक दूसरे से मिलें तो आपस में "अस्सलाम अ़लैकुम" (तुम पर सलामती हो) कहें। इससे बरकत होती है। परस्पर प्रेम बढ़ता है। रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम लोग उस वक़्त तक जन्नत में दाख़िल न होगे जब तक ईमान न ले आओ और उस वक़्त तक ईमान न लाओगे जब तक परस्पर प्रेम न करोगे। मैं तुम को एक ऐसी बात बताता हूं जब तुम उसको करोगे तो आपस में प्रेम करने लगोगे और वह यह है कि "सलाम को फैलाओ" सलाम करने के लिए जाने अनजाने, बड़े और छोटे में अंतर नहीं। हां अदब के ख़याल से छोटा बड़े को, गुज़रने वाला बैठे हुए को और छोटी जमाअ़त बड़ी जमाअ़त को और सवार पैदल चलनेवाले को सलाम करे।

घर में दाखिल होते वक्त बीवी बच्चों को सलाम करो। मजलिस से उठकर जाते वक्त भी लोगों को सलाम करो। जिस को सलाम किया जाए उसके लिए ज़रूरी है कि सलाम का जवाब कम से कम उसी तरह दे अर्थात कहे " व अ़लै कुमुस्सलाम" और यदि कुछ अच्छे शब्द बढ़ा दे जैसे "वअ़लैकुमुस्सलामु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू" कहे तो ज़ियादा सवाब पाए।

# प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौलाना अब्दुलहयी हसनी

## वालिदैन के दोस्तों और अज़ीज़ों के साथ हुस्ने सुलूक

१८६. हज़रत अब्दुल्लाह बिन दीनार (रज़ि०) से रिवायत है कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) जब मक्का तशरीफ़ ले जाते तो उन के साथ एक गधा होता था जब सवारी पर बैठे–बैठे उकता जाते तो तफ़रीह के लिए गधे पर सवार हो जाते आप के पास अमामा था, जिस को बांधा करते थे एक बार वह गधे पर सवार थे कि उसी वक्त उन के पास से एक देहाती गुज़रा उस से हज़रत अब्दुल्लाह ने फ़रमाया क्या तुम फुलां शख्स के बेटे फुलां नहीं हो? उसने कहा हां, आप ने गधा उसके हवाले कर दिया और फ़रमाया तुम इस पर सवार हो जाओ, पगड़ी भी दे दी और फरमाया इसको बांध लो कुछ साथियों ने हज़रत अब्दुल्लाह से कहा अल्लाह आप को माफ़ करे आपने उस आराबी को वह गधा दे दिया जिस पर तफ़रीह करते थे और वह पगड़ी भी दे दी जो खुद बांधा करते थे (यह सुनकर) हज़रत अब्दुल्लाह ने फ़रमाया मैंने हुजूर सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना है कि सब से बड़ी नेकी यह है कि आदमी अपने वालिद के इन्तिक़ाल के बाद उससे महब्बत करने वालों के साथ अच्छा व्यवहार करे उस शख्स के वालिद हज़रत उमर (रज़ि०) के दोस्त थे।

(मुस्लिम)

## वालिदैन से सम्बन्धित लोगों से अच्छा व्यवहार :

१६०. हज़रत मालिक बिन रबीआ साअ़दी (रज़ि०) से रिवायत है कि हम लोग हुजूर सल्ल० के पास थे कि इतने में बनू सलमा का एक शख्स आया और अ़र्ज़ किया अल्लाह के नबी क्या कोई ऐसी भी नेकी है जिसको मैं अपने वालिदैन के इन्तिक़ाल के बाद भी उनके हक़ में करूं ? आपने फ़रमाया हां उनके लिए दुआ–ए–रहमत करो और इस्तिग़फ़ार करो। उनके बाद उनके अहद को पूरा करो और उन रिश्तों को बाकी रखो जो उन्हीं के जरिये से हैं और उनके दोस्तों का इकराम करो।

(अबू दाऊद)

## हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) की फ़ज़ीलत –

१६१. हज़रत आइशा (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर सल्ल० की बीवियों में जितना मैं हज़रत खदीजा पर रश्क करती थी उतना किसी पर नहीं मैंने उनको देखा नहीं था लेकिन हुजूर सल्ल० अकसर उनका ज़िक्र फ़रमाया करते थे और अकसर आप (सल्ल०) बकरी ज़ब्ह फ़रमाते फिर उसके कई हिस्से करते और इन हिस्सों को हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) की सहेलियों को भेज देते कभी–कभी मैं कहती जैसे दुन्या में ख़दीजा (रज़ि०) के सिवा कोई और औरत थी ही नहीं मेरी बात सुनकर आप फ़रमाते खदीजा के बारे में क्या कहना उनसे मुझे औलाद मिली।

(मुस्लिम बुखारी)

१६२. हज़रत आइशा (रज़ि०) ही से रिवायत है कि हज़रत खदीजा की बहन 'हाला'बिन खुवैलिद ने हुजूर सल्ल० से अन्दर आने की इज़ाज़त चाही उनकी आवाज़ से हज़रत ख़दीजा की याद ताजा हो गई और आप सल्ल० को एक आनन्द का आभास हुआ और फ़रमाया, ओ हो ! हाला बिन्त खुवैलिद .....

(मुस्लिम)

## अन्सार हज़रात की फ़ज़ीलत–

१६३. हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) से रिवायत है कि मैं एक दिन ज़रूर बिन अ़ब्दुल्लाह बजली (रज़ि०) के साथ सफ़र में निकला वह मेरी ख़िदमत करते थे मैं में कहा यह न कीजिए उन्होंने जवाब दिया कि मैंने अन्सार को देखा कि हुजूर सल्ल० के साथ हुस्ने सुलूक कर रहे हैं मैंने कसम खाली थी कि अन्सार में से जिसके साथ भी रहूंगा उसकी ख़िदमत करूंगा। (बुखारी मुस्लिम)

## रिश्ता जोड़ना और रिश्ता तोड़ना –

१६४. हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने मख़लूक को पैदा किया, जब उससे फ़ारिग़ हुआ तो रिश्ता ने अ़र्ज़ किया, क्या क़तअ़े रहमी अर्थात रिश्ता तोड़ने से पनाह मांगने की यह जगह है ? अल्लाह तआला ने फ़रमाया हां क्या तू राज़ी है कि तुझे जो जोड़े उसे मैं जोडूं जो तुझे काटे उसे मैं काटूं रिश्ता ने कहा हां अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया– बस यह तेरे लिए है फिर रसूलुल्लाहि सल्ल० ने फ़रमाया अगर तुम चाहो तो इस आयत

( शेष पृष्ठ १० पर )

# इस्लाम एक परिचय

मौ० सैयद अबुल हसन अली नदवी

## अन्य स्वाभाविक बातें और मुसलमान

बीमारी आज़ारी इन्सान के साथ लगी हुई है। एक मुसलमान के लिए बीमारी की हालत में भी नमाज़ मुआफ़ नहीं है। अलबत्ता इस्लामी शरीअत ने इस बारे में बीमार को बहुत सी सहूलतें दी हैं, अगर वह मस्जिद जाकर जमाअत के साथ नमाज़ नहीं पढ़ सकता तो घर में नमाज़ अदा करने की इजाज़त है। अगर खड़े होकर नहीं पढ़ सकता तो बैठकर और अगर बैठकर भी उसके लिए पढ़ना दुश्वार हो तो लेटकर और अगर लेटकर भी नमाज़ के अरकान (सोपान) अदा नहीं कर सकता तो इशारे से पढ़ सकता है। अगर पानी का प्रयोग उसके लिए हानिकारक है तो वुजू के बजाए तयम्मुम की इजाज़त है। यथासम्भव पवित्रता (तहारत) का ध्यान भी रखना ज़रूरी है।

बीमार को देखने जाने (अियादत) का इस्लाम में बड़ा महत्व है। यह बड़े पुण्य का काम है। लेकिन बीमार के पास अधिक देर न बैठे और कुशल जानकर जल्द चला आये क्योंकि देर तक बैठने और लम्बी बात करने से उसके तीमारदारों को असुविधा होती है, ऐसी परिस्थितियों की बात और है जिनमें बीमार स्वयं ही देर तक बैठना पसन्द करता हो और उसका दिल बहलाने की ज़रूरत हो।

मुसलमान को अन्त समय की चिन्ता बराबर रहती है, और उसकी मनोकामना होती है कि वह दुन्या से ईमान के साथ रुख़सत हो और उसका अन्त कल्म–ए–शहादत, तौहीद और रिसालत के अक़ीदे पर हो। मुस्लिम समाज में जहां थोड़ी शिक्षा, का भी प्रभाव है, यह परम्परा चली आ रही है कि जब कोई मुसलमान किसी मुसलमान से दुआ के लिए कहता है, या जब किसी नेक बन्दे के सम्पर्क में आता है और उससे मिलता है तो उससे अनुरोध करता है कि दुआ कीजिए कि ख़तिमा–बिल–ख़ैर हो। और इसको बड़ा अहोभाग्य समझा जाता है कि कल्मा पढ़ता हुआ और खुदा का नाम लेता हुआ दुन्या से रुख़सत हो।

जीवन के अन्तिम क्षणों का आभास होने पर घर वाले और अन्य सम्बन्धी व अन्य लोग उसके पास कलमा पढ़ते हैं ताकि सुनकर वह भी पढ़ ले। हलक़ सूख जाने का डर हो तो ज़म ज़म अगर घर में हो या पानी, क्योड़ा आदि रोगी के मुंह में टपकाते हैं। इस मौके पर सूरः यासीन पढ़ने का बड़ा महत्व बताया गया है। लोग सूरः यासीन पढ़ते हैं और अन्तिम क्षणों का आभास होने पर उसे क़िबला रूख (काबा की ओर मुख) कर देते हैं।

## मृत्यु और कफ़न–दफ़न

मृत्यु के बाद मय्यित को गुस्ल देने की तैयारी और कफ़न की व्यवस्था की जाने लगती है। कफ़न में नये पाक और सफ़ेद कपड़े की व्यवस्था की जाती है। मर्द के कफ़न में एक बेसिला कुर्ता, एक तहबन्द और एक ऊपर की चादर होती है। औरतों के कफ़न में इनके अलावा एक सरबन्द या कसावा और सीना बन्द भी होता है। गुस्ल (स्नान) का भी ख़ास तरीक़ा है। गुस्ल हर मुसलमान दे सकता है। नेक लोगों द्वारा गुस्ल देना ज़ियादा अच्छा समझा जाता है।

जब जनाज़ा तैयार हो जाता है तो नमाज़ शुरूअ होती है जिस में शामिल होने का बड़ा सवाब है। नमाज़े जनाज़ा जमाअत के साथ है। लेकिन इसमें रूकुअ और सज्दा नहीं। सब लोग सफ़ें बांधकर (लाइन बनाकर) खड़े हो जाते हैं। एक या तीन या पांच या सात या ताक़ संख्या (विषम संख्या) में सफ़ें बन जाती हैं और कोई आलिम या नेक आदमी या मुहल्ले की मस्जिद का इमाम थोड़ा सा आगे बढ़कर जनाज़ा सामने रखकर खड़ा हो जाता है और नमाज़ शुरूअ हो जाती है। जनाज़े की नमाज़ में चार तकबीरें हैं। सब कुछ ख़ामोशी के साथ पढ़ा जाता है। पहली तकबीर के बाद वह दुआ पढ़ी जाती है जो हर नमाज़ में पढ़ी जाती है, दूसरी तकबीर के बाद दुरूद शरीफ़ पढ़ा जाता है। तीसरी तकबीर के बाद सब मुसलमान (बिना आवाज़ के) एक दुआ पढ़ते हैं। जिसका अर्थ इस प्रकार है।

"ऐ अल्लाह ! हमारे ज़िन्दा और मुर्दा, हाज़िर व ग़ाइब, छोटे बड़े और मर्द व औरत की बख़शिश फ़रमा। ऐ अल्लाह हममें से जिसको ज़िन्दा रखे उसको इस्लाम पर ज़िन्दा रख और जिसको तू दुन्या से उठाये उसको ईमान पर उठा।"

जनाज़ा अगर किसी नाबालिग़ बच्चा या बच्ची का हो तो दूसरी दुआ पढ़ी जाती है। जिसका अर्थ यह है कि "ऐ अल्लाह ! इस बच्चे को हमारा पेशरौ (आगे जाने वाला) हमारे लिए बदला और हमारे लिए (क़ियामत में) सिफ़ारिश करने वाला बना और इसकी सिफ़ारिश क़ुबूल फ़रमा।"

चौथी तकबीर के बाद सलाम फेरा जाता है और लोग जनाज़े को कान्धा देते हुए क़ब्रिस्तान ले जाते हैं कन्धा देने और मय्यित को क़ब्र तक पहुंचाने और उसकी तदफ़ीन (दफ़नाने) तक वहां रहने का बड़ा महत्व है। और इसका बड़ा सवाब बयान किया गया है। इस लिए आ़मतौर से लोग कन्धा देने की कोशिश करते हैं और कब्रिस्तान कितना ही दूर हो, मौसम कितना ही सख़्त हो, जनाज़ा हाथों हाथ मुसलमानों के कान्धों पर जल्दी क़ब्रस्तान पहुंच जाता है।

क़ब्र आमतौर पर पहले से तैयार होती है। जनाज़ा पहुंचने पर कुछ लोग क़ब्र के अन्दर उतरते हैं और मय्यत को क़ब्र में इस प्रकार रखते हैं कि उसका मुख क़िबले की ओर हो। फिर बनगे या तख़्ते रखकर ऊपर से मिट्टी डाल देते हैं। जिसको मय्यित को मिट्टी देना कहते हैं मिट्टी देते समय कुरआन शरीफ के जो शब्द ज़बान पर होते हैं उनका अर्थ इस प्रकार है :

"हमने तुमको इसी मिट्टी से पैदा किया है और इसी में हम तुम को वापस करेंगे और फिर इसी से तुमको दोबारा बाहर निकालेंगे।" (सूरः ताहा–५५)

जब क़ब्र तैयार हो जाती है और मिट्टी का एक कोहान सा बन जाता है, उस समय निकट सम्बन्धी कुछ देर ठहरकर मय्यित के लिए दुआ करते हैं और कुछ कुरआ़न पढ़ते हैं।

ग़मी के घर में आ़मतौर से ग़मी के दिन मित्रों, और सम्बन्धियों के घरों से ग़मी वाले घर के लोगों और वहां आये रिश्तेदारों के लिए खाना आता है। ऐसा रिवाज इसलिए है कि मय्यित वाले घर के लोगों को स्वयं खाने पकाने का मौका नहीं होता है और वह ग़मी में होते हैं। वास्तव में यह एक सुन्नत है।

## इस्लामी सभ्यता और संस्कृति

नबी केवल विश्वास व अक़ीदा और शरीअ़त व आचार्य संहिता की पूर्ति का प्रयास नहीं करते बल्कि वे सभ्यता और संस्कृति के विकास पर भी बल देते हैं। इस्लामी सभ्यता व संस्कृति के कुछ विशेष लक्षण हैं जो उसे अन्य सभ्यताओं से मुमताज़ बनाते हैं।

मुसलमानों की सभ्यता का पहला तत्व आस्था व अक़ीदा पर आधारित इस्लामी जीवन शैली आचरण है। यह तत्व (फ़ैक्टर) दुन्या के मुसलमान की सभ्यताओं में उभय खण्ड (कामन फैक्टर) की हैसियत रखता है। मुसलमानों दुन्या के किसी भाग, किसी देश में बसते हों और उनकी कोई भी भाषा हो और उनकी वेषभूषा कुछ भी हो, यह तत्व, समान रूप से अवश्य पाया जाता है और इस कारण वह एक कुटुम्ब के व्यक्ति और हर जगह एक ही सभ्यता के रखने वाले नज़र आते हैं। इस सभ्यता के लिए "इब्राहीमी सभ्यता" से अधिक उपयुक्त कोई शब्द नहीं।

इब्राहीमी सभ्यता की आधारशिला तौहीद, सहज प्रवृत्ति, सीधी सच्ची सोच, सद्व्यवहार, अल्लाह का डर, मायारूपी संसार के उलझावे से बचने, मानव जाति के प्रति उदारता व रहम और सुरूचि पर टिकी है। हज़रत इब्राहीम (अ०) इस सभ्यता के प्रवर्तक थे और हज़रत मुहम्मद सल्ल० उनके वारिस थे और आपने इब्राहीमी सभ्यता में नये सिरे से जान डालदी और इसकी पूर्ति की तथा इसे स्थायित्व प्रदान किया और इसे एक विश्वव्यापी सभ्यता का रूप दिया।

## इब्राहीमी सभ्यता की तीन विशेषताएं

इब्राहीमी सभ्यता की तीन विशिष्ट विशेषताएं हैं जो उसे दुन्या की सभ्यता में विशिष्ट स्थान प्रदान करती है– (१) अल्लाह के अस्तित्व का यक़ीन (२) तौहीद (अर्थात परमेश्वर एक है) का अक़ीदा (३) शराफ़त और मानव–मानव एक समान (इन्सानी बराबरी) की स्थायी परिकल्पना । इन विशेषताओं का इतना ज्वलन्त और विशिष्ट स्वरूप नहीं देखने को मिलता है।

मुसलमानों की सभ्यता व संस्कृति को ऐसा समझना चाहिए जैसे अलग–अलग पसन्द, स्थानीय परिस्थितियों, जलवायु और मौसम के अनुसार अलग–अलग फ़ैशन और डिज़ाइन के वस्त्र होते हैं, मगर इन सब कपड़ों पर रंग एक ही चढ़ा हो और उनके एक एक तार में अल्लाह के नाम और उसकी याद का रंग रच बस गया है। अल्लाह का नाम, मुसलमान बच्चा जब पैदा होता है तो सब से पहले उसके कान में अज़ान दी जाती है। और इस प्रकार सबसे पहले और

स्वयं उसके नाम से पहले उसे जिस नामसे मानूस और परिचित किया जाता है वह अल्लाह का नाम है। वह सात दिन का होता है तो उसका अ़क़ीक़ा किया जाता है और उसका नाम रखा जाता है उसकी शिक्षा–दीक्षा का शुभारम्भ अल्लाह के नाम और कुरआन की आयतों से होता है, भारतीय मुसलमानों में आज भी इसी रस्म को "तस्मीयःख़्वानी" अथवा "बिस्मिल्लाह कराना" कहा जाता है। निकाह़–विवाह के समय भी खुदा का नाम बीच में लाया जाता है और उसके नाम की लाज रखने का संकल्प लिया जाता है उसने आदम के वंशज में मर्द व औ़रत के जोड़े पैदा किये। ई़द का दिन आता है तो भी ई़दगाह जाते–आते समय अल्लाह की बड़ाई का तराना पढ़ा जाता है। बक़रई़द में अल्लाह के नाम पर कुर्बानी करने को कहा गया है।

हर मुसलमान की सबसे बड़ी इच्छा होती है कि जीवन के अन्तिम क्षणों में अन्तिम शब्द और आख़िरी बोल जो उसकी ज़बान पर आये वह अल्लाह का पाक नाम हो, और इसी नाम की रट के साथ वह दुन्या से विदा ले। किसी के इन्तिक़ाल (मृत्यु) का समाचार पाते ही, पढ़े लिखे हर मुसलमान की ज़बान से एकदम जो शब्द निकलता है वह है "इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन" अर्थात हम अल्लाह ही के हैं और हमें उसी के पास जाना है।" और जब अन्तिम विदा (नमाज़े जनाज़ा) का समय आता है तो उसमें आदि से अन्त तक अल्लाह ही का नाम होता है। जब मय्यित को क़ब्र में उतारा जाता है तो यह कह कर कि अल्लाह के नाम के साथ और उसके पैगम्बर की मिल्लत व मज़हब पर। क़ब्र में जब से रखा जाता है तो उसका मुख अल्लाह के घर (कअ़बा) की ओर होता है। और दफ्न के बाद जब कोई मुसलमान उसकी क़ब्र के पास से गुज़रता है तो सूरः फ़तिह़ा पढ़ता है जिसके प्रारम्भ में अल्लाह की बड़ाई बयान की गयी है इस प्रकार मुसलमान के पूरे जीवन में और हर हर क़दम पर अल्लाह का नाम होता है।

यह तो जीवन चक्र की बात हुई। दैनिक जीवन में भी अल्लाह के नाम का हर समय साथ रहता है। मुसलमान अल्लाह का नाम लेकर खाना शुरू करता है, अल्लाह के नाम और शुक्र पर खाना समाप्त करता है। उसका खाना–पीना, कपड़े बदलना, शौच का जाना सब अल्लाह के नाम और उसके ध्यान के साथ होता है। छींक आये तो उस पर भी अल्लाह का नाम लेने का निर्देश और जो सुने उसको भी दुआ देने की शिक्षा दी गई है। माशा अल्लाह, इन्शा अल्लाह, लाहौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहि मुस्लिम समाज के अभिन्न अंग और उसकी पहचान व अ़लामत हैं।

मुसमानों की सभ्यता की दूसरी अन्तर्राष्ट्रीय विशेषता और पहिचान उनका तौह़ीद का अ़क़ीदा और विश्वास है। यह एकेश्वरवाद उनकी आस्था से लेकर कर्म तक और उपासना से लेकर आयोजनों तक हर जगह स्पष्ट दिखाई देती है। उनकी मस्जिदों के मीनारें पांच बार इस अ़क़ीदे का ऐलान करते हैं कि अल्लाह के सिवा कोई अि़बादत और बन्दगी के लाइक़ नहीं। उनके घरों को भी इस्लामी उसूल के अनुसार बुतपरस्ती और शिर्क से सुरक्षित होना चाहिए। तस्वीरें, स्टेचू, मूर्तियां उनके लिए नाजायज़ हैं, यहां तक कि बच्चों के खिलौनों में भी इसका लिहाज़ ज़रूरी है। धार्मिक आयोजन हो या राष्ट्रीय त्योहार, राजनीतिक नेताओं का जन्म दिन हो अथवा मज़हबी पेशवाओं की जयन्ती या ध्वजारोहण तस्वीरों और स्टेचू के सामने झुकना, उनके सामने हाथ जोड़कर खड़ा होना या उनको हार पहनाना मुसलमान के लिए मना और उसकी तौहीद के विपरीत है और जहां कहीं मुसलमान अपनी इस्लामी सभ्यता पर क़ाइम और इस पर कारबन्द होंगे, वह इन कार्यों से बचेंगे। नामों में, आयोजनों में, क़सम खाने में, बड़ों को श्रद्धा व सम्मान देने में इस्लामी तौहीद की सीमाओं से आगे निकल जाना और इन बातों में किसी क़ौम की नक़्ल, इस्लाम से हटने का पर्याय है।

इस्लामी सभ्यता की तीसरी अन्तर्राष्ट्रीय पहचान इन्सान की शराफ़त और उत्कृष्टता की वह परिकल्पना और मानव समता का वह अ़क़ीदा है जो मुसलमान की घुटटी में पड़ा है और जो उसका इस्लामी मिज़ाज बन गया है। इस अक़ीदे का कुदरती नतीजा यह है कि मुसलमान छुआ–छूत की आ़दत से अपरिचित है। वह निःसंकोच दूसरे मुसलमान बल्कि दूसरे इन्सान के साथ खाने के लिए तैयार हो जायेगा। और दूसरे को अपने खाने में शामिल होने को कहेगा। कई लोग और विभिन्न लोग निःसंकोच एक बर्तन में खाएंगे, एक दूसरे का बचा हुआ पानी पी लेंगे।

अमीर–ग़रीब, नौकर, मालिक सब एक साथ कन्धा से कन्धा मिलाकर खड़े होकर नमाज़ पढ़ेंगे कोई कम हैसियत लेनिक अ़िल्म वाला इमाम बन सकता है, और बड़े–बड़े घराने वाले और उच्च पदाधिकारी उसके पीछे नमाज़ पढ़ेंगे।

उक्त प्रमुख विशेषताओं के साथ इस्लामी सभ्यता की कुछ गौण विशेषताएं भी हैं। जैसे अच्छे कामों का दायें, हाथ से करना, दायें हाथ से खाना, दायें हाथ से पानी पीना, किसी को कुछ लेना देना भी दायें हाथ से।

(पृष्ठ ४ का शेष)

कुछ लोगों ने कहा कि हम लोग दुनिया और बुनियाद लिखते चले आ रहे हैं अब आप दुन्या और बुन्याद लिखते हैं। मैंने कहा भाई जब आप जानते हैं कि इन शब्दों में न गतिहीन (साकिन) है तो उसे इ की मात्रा क्यों देते हैं? फिर आधा न लिखने में आप को क्या कठिनाई है ?

हमने "सच्चा राही" में किसी हद तक यह योजना चला रखी है कि उर्दू शब्दों को शुद्ध उच्चारण वाले इम्ला से लिखें हम अपने लेखकों से भी अनुरोध करते हैं कि वह हमारा साथ दें। हम अपने पाठकों से भी क्षमा चाहते हैं कि हम दुन्या, बुनियाद और दरिया न लिख कर, दुन्या, बुन्याद और दर्या (दरया) सोच समझ कर लिखते हैं। इसी प्रकार के कुछ शब्द पीछे लिखे जा चुके हैं।

हमारे जो लेखक इसको पसन्द नहीं करते हम को आशा है कि वह शीघ्र ही इसे अपना लेंगे।

सुब्हानल्लाहि वलहम्दुलिल्लाहि
वल्लाहु अकबर
खूब पढ़ा करें।

(पृष्ठ ६ का शेष)

को पढ़ो,

अनुवाद – "क्या यह संभव है जब तुम को हुकूमत और मौका मिले तो तुम ज़मीन पर फसाद फैलाओ और कतअ़ रहिमी करो (नाते तोड़ो) यह वही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लअ़नत की और अन्धा बहरा किया। (मुस्लिम, बुखारी)

## जो रिश्ता काटेगा अल्लाह उसको काटेगा –

१६५. ह़ज़रत आइशा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० ने फ़रमाया, रिश्ता अ़र्श से सम्बन्धित है और कहता है जो मुझे जोड़ेगा अल्लाह उसको जोड़ेगा और जो मुझे काटेगा अल्लाह उसको काटेगा। (बुखारी, मुस्लिम)

## रिश्ता काटने का बदला रिश्ता जोड़ने से –

१६६. ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० से एक व्यक्ति ने अ़र्ज़ किया, मेरे करीबी रिश्तेदार हैं मैं उनसे रिश्ता जोड़ता हूं और वह तोड़ते हैं। मैं उनके साथ भलाई करता हूं वह मेरे साथ बुराई करते हैं मैं नर्मी करता हूं वह मेरे साथ सखती करते हैं आप ने फ़रमाया जैसा तुम कह रहे हो अगर सच है तो तुम उनके मुंह में ख़ाक डालते हो और अल्लाह तआ़ला की मदद बराबर तुम्हारे साथ रहेगी जब तक तुम उस पर क़ायम रहोगे। (बुखारी, मुस्लिम)

## बदला देने वाला सिल–ए–रह़मी करने वाला नहीं –

१६७. ह़ज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आ़स (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० ने फरमाया बदला देने वाला सिल–ए–रह़िमी करने वाला नहीं है सिल–ए–रह़िमी करने वाला वह है कि उसके साथ कतअ़े रह़िमी की जाए और वह सिला रहमी करे। (बुखारी)

## रिश्ता जोड़ने की फ़ज़ीलत –

१६८. ह़ज़रत अबू अय्यूब ख़ालिद बिन ज़ैद अन्सारी (रज़ि०) से रिवायत है कि एक आदमी ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्ल० मुझे ऐसा अ़मल बताइये जो मुझे जन्नत में दाख़िल करे और दोज़ख़ से दूर रखे रसूलुल्लाहि सल्ल० ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला की अ़िबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न करो, नमाज़ क़ायम करो, ज़क़ात दो और रिश्ता जोड़ो। (बुखारी व मुस्लिम)

## रसूलुल्लाहि सल्ल० की शिक्षा:

१६९. ह़ज़रत अ़म्रबिन उतबः रज़ि० से रिवायत है कि मैं नबी करीम सल्ल० के पास आया अर्थात नुबूव्वत के शुरू में, मैंने उनसे कहा आप सल्ल० कौन हैं ? फ़रमाया मैं पैगम्बर हूं मैंने कहा कि पैग़म्बर क्या है ? फ़रमाया मुझको अल्लाह तआ़ला ने भेजा है। मैंने कहा क्या चीज़ दे कर भेजा है – फ़रमाया रिश्ता जोड़ने के लिए और बुतों को तोड़ने के लिए और यह कि अल्लाह तआ़ला को एक समझा जाए और उसके साथ किसी को शरीक न किया जाए। (मुस्लिम)

0522-508982
Mohd. Miyan
Jwellers
एक भरोसेमन्द सोने चान्दी के ज़ेवरात की दुकान
1-2 Kapoor Market, Victoria Street Lucknow-226003

# क्या इस्लाम तलवार के ज़रिये फैला ?

आमिना उस्मानी

इस्लाम ताक़त के बल पर और तलवार के द्वारा फैला ?

यह एक ऐसी अनुचित और निराधार बात है कि कोई भी न्यायप्रिय व्यक्ति इसे नहीं मान सकता। असंख्य न्ययप्रिय ग़ैर मुस्लिमों ने इस बात को स्वीकारा है कि इस्लाम तलवार के बल पर नहीं बल्कि अपनी सच्ची शिक्षा एवं प्राकृतिक आकर्षण के कारण फैला है। अतएव इस सम्बन्ध में डाक्टर ताराचंद लिखते है –

"इस्लाम में निःसन्देह ऐसी विशेषताएं व गुण मौजूद हैं जिनके कारण उसे बहुत थोड़े समय में ही अत्यधिक प्रगति मिली। सातवीं सदी में जब इस्लाम का झंडा बुलन्द हुआ और अरब के समस्त क़बीले एक झंडे के नीचे जमा हो गए तो वे तेजी के साथ चारों ओर फैलने लगे।"

डाक्टर ताराचन्द आगे लिखते हैं –

"कोलम में मीतकनो नाम के क़ब्रिस्तान में अली बिन उस्मान की क़ब्र पर २०४ हिजरी (७८३ई०) का पत्थर लगा है जिससे मालूम होता है कि आठवीं सदी में मालाबार तट पर मुसलमान आबाद हो गए थे। मसुलमानों का प्रभाव बहुत जल्द बढ़ा। हिन्दू राजाओं ने उनकी बड़ी आवभगत की। उनको व्यापार की सुविधाएं उपलब्ध करायीं उनको ज़मीन खरीदने और मस्जिदें बनाने की अनुमति दी मालाबार में आबाद होते ही उन्होंने अपने धर्म को फैलाने का प्रयास किया। मुसलमान पादरी व पुरोहित नहीं होते लेकिन हर मुसलमान का कर्तव्य है कि वह अपने धर्म का प्रचार करे।"

डॉक्टर ताराचन्द लिखते हैं –

"इस प्रचार व प्रसार के काम में न केवल मर्द बल्कि औरतों तक ने बहुत अधिक भाग लिया। यहां तक कि मुसलमान क़ैदी भी इस्लाम के प्रचार प्रसार के लिए तैयार रहते थे। एक मुसलमान कैदी ने सबसे पहले यूरोप में इस्लाम फैलाया। शैख अहमद मुजद्दिद को जहांगीर ने क़ैदखाने में डाल दिया तो उन्होंने दो साल में सैकड़ों कैदियों को मुसलमान कर लिया। आठवीं सदी में तो इस्लाम को दिन दूनी और रात चौगुनी तरक़्की हुई।

डॉ० ताराचन्द ने इसके कई कारण लिखे–

१. लोग उनको सम्मान की दृष्टि से देखते थे। उनकी दौलत व ताकत का और चाल चलन का असर पड़ा।

२. मुसलमानों का धर्म सादा और अच्छा था। उनकी पूजा के तरीक़े दिलों में घर करने वाले और रात दिन खुदा की याद दिलाने वाले थे।

३. रीनान एक फ्रांसीसी विद्वान ने माना है कि जब मैं किसी मस्जिद में जाता हूं तो मेरा दिल एक बड़े ही अनोखे आनन्द से भर जाता है और मेरे दिल में यह विचार पैदा होता है कि मैं मुसलमान क्यों न हुआ। जब रीनान जैसे कट्टर और नास्तिक वैज्ञानिक के दिल पर इस्लामी इबादत का ऐसा असर होता था तो भला दूसरों के बारे में क्या कहना।

४. एक और बात जो भूलनी नहीं चाहिए वह यह कि पहली सदी में इस्लाम एक बड़ा व्यवहारिक धर्म था। इस्लाम के मानने वाले अपने अक़ीदों को केवल ज़बान से नहीं दोहराते थे बल्कि अपने जीवन व चाल चलन में भी उसके पाबन्द होते थे।

५. उनकी नमाज़ पढ़ने का समय, पंक्तियों का क्रम, रोज़ो की मेहनत, दान और ज़कात का तरीक़ा, समाज में समानता का व्यवहार ऐसी चीज़ें थीं जो आदमी के दिल पर प्रभाव डाले बिना नहीं रह सकती थीं।

श्री स्टेन्ले लीन पोल अपनी प्रख्यात पुस्तक " मोरेस इन स्पेन" में लिखते हैं – "स्पेन वासियों को धार्मिक स्वतंत्रता के सम्बन्ध में कोई शिकायत न थी वे इस नयी हुकूमत से खुश थे और खुलकर इसको स्वीकार करते थे कि अरबों की हुकूमत हमारे निकट फिरंगियों या गोथ की हुकूमत से अधिक पसन्दीदा है और इस का प्रमाण कि ईसाई अपने नए शासकों से खुश थे यह है कि आठवीं सदी में एक भी विद्रोह की घटना नहीं हुई। गुलामों के साथ गोथ और रूमी शासकों ने बड़ा ही निर्मम व अत्याचारी व्यवहार किया

था। वे इस नयी हुकूमत में अपने को बधाई देते हैं। श्री ली लिखते हैं कि – "मुसलमानों के निकट सवाब (पुण्य) के कामों में गुलाम आजाद करने से अधिक कोई चीज़ प्रिय नहीं है अतः कोइ अचरज की बात नहीं है कि हम स्पेन में गुलामों को तेज़ी के साथ नया धर्म (इस्लाम) स्वीकार करते और उसके द्वारा आजाद होते देखते हैं लेकिन केवल गुलामों ही ने इस धर्म को नहीं स्वीकार किया वरन् बड़ी बड़ी जायदादों और सम्पत्तियों वाले और उच्च सम्मान प्राप्त लोग भी मुसलमान हो गए या तो इस लिए कि जिज़्या से बचें या इसलिए कि उनकी ज़मींदारियां सुरक्षित रहें या इस कारण कि इस्लाम के जैसे ईश्वरीय धर्म की सादा शिक्षा एवं महानता को सच्चे दिल से उन्होंने पसन्द किया।"

प्रोफेसर गिब्बन लिखते हैं–

"इस्लामी इतिहास में कितनी ही बार ऐसे क्षण आए कि इस्लामी सभ्यता का बड़ी कठोरता के साथ मुकाबला किया गया लेकिन इसके बावजूद वह पराजित न हो सकी। इसका बड़ा कारण यह है कि आध्यात्मवाद या आध्यात्मवादियों (सूफियों) की सोच व तरीक़ा अर्थात प्रचार प्रसार का तरीका तुरन्त उसकी मदद को आ जाता और उसे इतनी शक्ति व बल प्रदान करता कि कोई शक्ति इसका मुकाबला नहीं कर सकती थी।"

डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद लिखते हैं –

"यह बात पूरे विश्वास के साथ कही जा सकती है कि शुरू से इनकी (मुसलमानों की) ओर से यह प्रयत्न रहा है कि हिन्दुओं के साथ न्याय पर आधारित व्यवहार किया जाए। प्रारम्भिक काल की घटना है कि जब ब्राहमनाबाद को मुहम्मद बिन क़ासिम ने विजय किया तो लोगों ने धार्मिक स्वतंत्रता की प्रार्थना की। मुहम्मद बिन कासिम ने इराक के गवर्नर हज्जाज के पास पत्र भेजा जिसका जवाब यह आया कि चूंकि हिन्दुओं ने आज्ञापालन कर लिया और खलीफा को कर देना स्वीकार कर लिया है अतः अब उनसे किसी और चीज़ की मांग नहीं की जा सकती वे हमारी सुरक्षा में हैं और हम उनकी जान व माल पर किसी प्रकार का आक्रमण नहीं कर सकते उनको अपने देवताओं की पूजा करने की अनुमति दी जाती है किसी व्यक्ति को अपने ध र्म का अनुसरण करने से कदापि न रोका जाये वे जिस प्रकार चाहें अपने घरों में रह सकते हैं।"

गांधी जी कहते हैं –

"पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की पवित्र जीवनी के अध्ययन से मेरे इस विश्वास में और अधिक दृढ़ता व मज़बूती पैदा हो गयी कि इस्लाम ने तलवार के बल पर इस धरती पर अपना प्रभाव नहीं जमाया बल्कि पैग़म्बरे इस्लाम का अत्यन्त सादा जीवन, मानवता के प्रति उनकी सहानुभूति व दया भाव और सम्मान, अपने साथियों और अनुयायियों के साथ गहरा, रिश्ता, साहस, बहादुरी, निर्भय, ईश्वर पर पूर्ण विश्वास और अपने उद्देश्य व लक्ष्य की सत्यता पर पूर्ण भरोसा ही इस्लाम की सफलता के वास्तविक कारण थे।"

## हिन्दुस्तानी चर्च मुम्बई के फादर विलियम कहते हैं–

"इस्लाम शांति का धर्म है जो लोग यह कहते हैं कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने इसे तलवार के द्वारा फैलाया, तो यह एक मन गढ़ंत बात है।"

## तेज बहादुर सिन्हा सम्पादक रूहेल खंड बरेली लिखते हैं–

"मुसलमान शासकों ने तलवार की ताक़त रखते हुए हिन्दुओं की हर धार्मिक चेतना यहां तक कि अंध विश्वासों तक का सम्मान किया।"

## सर थामस आर्नाल्ड लिखते हैं–

"विश्वव्यापी धर्मों में इस्लाम अकेला ऐसा धर्म है जो वेतन पाने वाले प्रचारकों और धनी प्रचारक मिशनों के बजाए आम मुसलमानों के द्वारा ज़मीन के एक किनारे से दूसरे किनारे तक फैल गया। इस्लाम का प्रचार मुसलमान शासकों ने नहीं किया बल्कि धार्मिक विद्वानों, बुजुर्गों पर्यटकों और व्यापारियों ने अच्छा नमूना प्रस्तुत करके इस्लाम को फैलाया। मुसलमान व्यापारी बड़े ही सफल प्रचारक साबित हुए। बुजुर्गों (सूफियों) का फिर भी एक मिशन था वे तो थे ही इस्लाम के लिए परन्तु व्यापारियों का व्यापार के दौरान में हर प्रकार का चरित्र व व्यवहार रहता था कि इस्लाम आपसे आप लोगों के दिलों में उतर जाता था। इस्लामी सेना ने कभी किसी को इस्लाम स्वीकार करने पर मजबूर नहीं किया।"

## डॉक्टर एच डी सेन्टहीलर लिखते हैं –

"यह आरोप कि इस्लाम स्वीकार न करने की सज़ा तलवार थी इतना भोंडा आरोप इस्लाम विरोधियों ने अन्याय करते हुए इस्लाम पर लगाये। आरोप लगाने वाले या तो इस्लाम को जानते नहीं या जान बूझकर सत्य को छुपाते

हैं।"

"इस्लाम तलवार से फैला" इस झूठे आरोप के खंडन के लिए ग़ैर मुस्लिम लेखकों की वे पुस्तकें और वक्तव्य जो न्याय पर आधारित और हर प्रकार के धार्मिक पक्षपात से पूरी तरह पाक हैं काफ़ी हैं और हर ज़माने में इस्लाम की गोद में कुछ ऐसी शुभ व पवित्र आत्माएं रहती हैं। उनके अपने वक्तव्य भी इस बारे में ऐसे ठोस प्रमाण उपलब्ध करते हैं कि जिनका इंकार बहुत कठिन है। इससे यह बात पूरी तरह स्पष्ट हो जाती है कि इस्लाम क्यों इतनी अधिक तेजी से फैला?

उदाहरण स्वरूप रिवर्ड एम०पाल जो एक प्रख्यात ईसाई प्रचारक थे उन्होंने मुस्लिम कलब नज़र बाग़ लखनऊ के कार्यालय में २७ जनवरी १९४१ ई० को इस्लाम स्वीकार किया । इस अवसर पर बोलते हुए उन्होंने कहा–

"मैं एक पुराना ईसाई प्रचारक था। मैं कुरआन पाक का अध्ययन इस दृष्टिकोण से करता था कि उसके अन्दर दोष एवं कमियों को तलाश करूं। परन्तु उसके गहन अध्ययन से मैं यह समझने लगा कि मैं तो इससे और अधिक रूचि ले रहा हूं। अन्ततः उसकी आश्चर्यजनक शिक्षाओं ने मेरे मस्तिष्क को रोशन कर दिया और मेरी आध्यात्मिक कल्पना बड़ी ऊंची हो गयी। मैं इस चिंता में रहने लगा कि मैं किस प्रकार अपने मुसलमान होने की घोषणा करूं, परन्तु आज रात अल्लाह के पवित्र ग्रन्थ ने मेरे अन्दर यह साहस पैदा कर दिया कि आप लोगों के सामने अत्यन्त हर्ष व उल्लास के साथ इस्लाम स्वीकार करने की घोषणा कर रहा हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि आप मेरे इस्लाम में शामिल होने और ईसाइयत से तौबा करने के गवाह रहें। मैं अपने पिछले जीवन पर अत्यन्त दुख व लज्जा व्यक्त करता हूं कि मेरा वह जीवन पूरी तरह नष्ट हो गया।"

मोनिका, नीव तीशाइन चैकोसलोवाकिया में २ सितम्बर १९४३ को एक ईसाई घराने में पैदा हुई। आपका इस्लामी नाम फ़ातिमा है। आपने इस्लाम क्यों स्वीकार किया? इसका जवाब स्वयं आप ही की ज़बान से सुनिये वे कहती हैं –

"ग़ैर मुस्लिम देशों के वासियों के सामने यदि यह प्रश्न हो कि मुहम्मद (सल्ल०) दार्शनिक थे या आप पर ईश्वर की ओर से ईशवाणी उरती थी? और जवाब में यदि उनके दिल दूसरी ओर से संतुष्ट हो जायें। तो वस्तुतः यह उन पर अल्लाह की दयादृष्टि की खुली निशानी है। इस रास्ते की शुरूआत जिसके द्वारा अल्लाह ने मुझे इस्लाम तक पहुंचाया इस दीन के मामले की ओर मेरा ध्यान पहले ही चला गया था। कुछ समय पहले जब मैं दर्शनशास्त्र सम्बन्धी विचारों और विभिन्न धर्मों पर विचार विमर्श करके अपनी योग्यता के अनुसार जानकारी जमा करती थी तो इसका कारण निश्चय ही किसी ऐसी चीज़ की आवश्यकता का आभास था जिसे मैं व्यक्त नहीं कर सकती । परन्तु मैं स्वाभाविक रूप से जानती थी कि यह मेरे अन्तःकरण में मौजूद है और कभी न कभी मैं इसे अवश्य पा लूंगी।

यहां जर्मनी में मुसलमानों से मेरे सम्बन्धों ने मुझे उनके धर्म पर अच्छी तरह सोच विचार करने के लिए तैयार किया। मेरी सबसे पहली राय अच्छी नहीं थी क्योकि मेरे जाननेवाले मुसलमानों में अधिकांश वे थे जो केवल नाम मात्र ही को इस्लाम से जुड़े हुए थे या जो इस्लाम की बिगड़ी हुई शक्ल को जानते थे जो यूरोप में प्रचलित हो गयी। इसके बावजूद मैं मुसलमानों के चरित्र एवं आचरण से प्रभावित हुई। जब मैं इस्लाम की आध्यात्मिक दुनिया में कुरआन, इस्लामी पुस्तकों और उस्ताद उमर के साथ तर्क वितर्क के कार्यक्रमों के साथ दाखिल हुई तो मुझे पता चला कि इस्लामी शिक्षाएं और मश्रिकी रस्मों में कितना महान अन्तर है । मैंने कुर्आन पढ़ा अल्लाह जिसे सत्य मार्ग दिखाना चाहता है उसका दिल इस्लाम के लिए खोल देता है, तुरन्त ही मुझे लगा कि जैसे इस्लाम मुझे अपनी ओर खींच रहा है और उसकी शिक्षाएं मेरी अ़क़्ल व प्रकृति को सम्बोधित कर रही है। मेरे लिए सबसे अधिक आकर्षक चीज़ उसकी आदर्श सामाजिक व्यवस्था थी जो मनुष्य के समस्त वर्गों को समान अधिकार देती है। इसके अतिरिक्त वह आसानी और छूट जिसकी कोई सीमा नहीं, समस्त धार्मिक और सांसारिक मामलों में स्वतंत्रता, इस सांसारिक जीवन की बिना किसी लाग लपेट के व्यवस्था, ज्ञान प्राप्त करने के लिए अनिवार्य बताया गया है, फिर औरत का श्रेष्ठ दर्जा और हर मनुष्य और अल्लाह के बीच सीधा सम्पर्क, इन सब चीज़ों ने मुझे आप से आप अपनी ओर खींच लिया।"

शव्वाल के महीने में ६ रोज़े रखने का बड़ा सवाब है। चाहे ६ एक साथ रखें चाहे छोड़ छोड़ कर।

## सुन्दर रहन सहन

# (बच्चियों की तालीम व तर्बियत)

(दसवीं क़िस्त)

ख़ैरुन्निसा 'बेहतर'

### छोटे बच्चों का इलाज :

कुछ बच्चों को ज़च्चा खाना (प्रसूति गृह) से शिकायतें पैदा हो जाती हैं, कभी ज़हर के दाने निकल आते हैं। कभी पेट में दर्द उठता है, कभी पसुली की शिकायत, कभी सीना जकड़ा होता है। इसी तरह एक न एक मर्ज़ खड़ा रहता है। अगर मातायें अनुभवी हुईं तो मर्ज़ बढ़ने नहीं पाता अन्यथा मर्ज़ बढ़ते बढ़ते काम तमाम कर देता है। अगर हकीम व डाक्टर मौजूद हुए तो आसानी होती है, मगर समय पर इतना रूपया न हुआ कि रोज़ फीस दी जाये, उनकी खातिर की जाये तो फिर दुशवारी है। इसलिए हर औरत के लिए जरूरी है कि ऐसे ऐसे आसान नुसखे याद रखे कि दिक़्क़त न उठाना पड़े।

### ज़च्चा खाना की बीमारियां :

शुरू में ज़च्चा खाने में कड़वा तेल लगाने का अधिक चलन है खासकर देहात में। गर्मी में बच्चों के सर में दाने पैदा हो जाते हैं मगर शक्ति के लिए इसका प्रयोग जारी रखते हैं। अगर गर्मी हो तो कुछ दिन तेल रोक दो। दूसरी दवायें बताऊंगी प्रयोग करती रहो, शिकायत समाप्त होने पर फिर वही तेल काम में लाओ। कड़वा तेल बच्चों के लिए देहाती हैसियत से बहुत लाभदायक है। अगर सर में दाने हैं और बदन में भी तो दूसरी दवा बना लो वह फायदा करेगी। ठंडी दवायें ज़च्चा खाने में न देना चाहिए।

नरकचूर ५० ग्राम, ज़ीरा सफेद ५० ग्राम, चाक्सू ५० ग्राम इन सबको बारीक कूट छान कर रख लो, नहार मुंह रोज़ दस ग्राम फांक लिया करो। अल्लाह ने चाहा तो इसी से दाने भी जाते रहेंगे। क़ै (उल्टी) और पेट की खराबी को भी यह नुस्खा लाभप्रद होगा। बच्चा पैदा होने से पहले नारियल व मिस्री की जगह अगर इसी का सेवन करें तो बच्चा बहुत तन्दुरूस्त रहेगा। यह शिकायतें न होंगी। कड़वा तेल की जगह यह दवायें लगाओ, कमेला, मुर्दारसंग, काफूर पीस कर नारियल के तेल में मिलाओ और जहां दाने हां वहां लगाओ। अगर कान में मैल के कारण कुछ शिकायत होगई हो तो कान में यह दवायें लगाकर सूखी मेंहदी छिड़क दो, फायदा होगा। ऐसे छोटे नुस्खे, याद रखो, इंशा अल्लाह बड़े उपयोगी होंगे।

### कान का दर्द :

अगर कान में दर्द हो तो यह करो : पहले सुखदर्शन की पत्ती का अ़रक़ निकाल कर गर्म करके डाल दो। इससे फायदा न हो तो माश (उरद) की पत्ती का अ़रक़ डालो, अगर यह समय पर न मिले तो पान बंगला हो या देशी लौंग, काली मिर्च, तम्बाकू मुंह से चबा कर कपड़े में ले के कान में छोड़ दो। अगर सर्दी से दर्द पैदा हो गया हो तो अजवाइन भी शामिल कर लो अगर गैस हो तो सौंफ मुंह से कुचल कर डालना लाभदायक है, अगर ज़ुकाम का दर्द है और बच्चा होशियार है कि वह सहन कर सकता है तो यह इलाज बहुत लाभदायक है। गुले बनफ़शः या बनफशः उबाल करके इस प्रकार बफ़ारः दो कि कान के अन्दर अच्छी तरह भाप पहुंचती रहे और खूब बन्द रखो कि हवा न लगे, देर तक उस पर कान रखे रहो, जब भाप कम हो जाये तो हटा लो, मगर फ़ौरन न खोल दो, जब पसीना आया हुआ सूख जाये तब खोलो, लेकिन उस समय भी हवा से एहतियात रखो, ओस से भी बचाओ, इन्शाअल्लाह जल्द फ़ायदा होगा। अगर तीन दिन ऐसा ही करो तो बिल्कुल शिकायत न रहेगी। करके देखा है।

### आंख का दर्द :

अगर आंखें आ जायें तो जोशान्दः पिलाओ और लेप भी प्रयोग करो लेप यह है– रसौत पीला तीन ग्राम, हलेला ज़र्द एक ग्राम, पठानी लोध एक ग्राम, आंबा हल्दी एक ग्राम, सफेदा काशगरी एक ग्राम, चाकसू मुकशर एक ग्राम, शब यमानी बिर्या एक ग्राम, हरी मको की पत्ती के अ़रक़ में पीसकर बारीक गोलियां बना के, ज़रूरत पड़ने पर घिसकर गर्म करके लेप कर दो, अगर आंखों में दर्द अधिक हो तो अफ़ीम और ज़ाफ़रान चार चार ग्राम शामिल कर लो, बड़ी लाभदायक है। अगर आंखें गर्मी से आ गई हैं तो अमरूद की पत्ती बारीक पीस कर फिटक्री बिर्या बारीक करके पत्ती गर्म करके और फिटक्री छिड़क कर बांध दो। इन्शाअल्लाह दर्द जाता रहेगा। (जारी)

प्रस्तुति तथा अनुवाद : मो० हसन अंसारी

# जिन्नात का परिचय

अबू मर्गूब

## शैतान की बात :

सूर–ए–अअ़राफ़ आयत ११ से २५ तक में आदम अलैहिस्सलाम की रचना, फ़िरिश्तों को सजदे का आदेश, इब्लीस का इन्कार आदि का वर्णन है। इस बयान से निम्न लिखित २३ बातें ज्ञात होती हैं –

(१) अल्लाह तआ़ला ने आदम अलैहिस्सलाम के पैदा करने का वर्णन किया।

(२) उन का रूप ठीक करने का वर्णन किया।

(३) फ़िरिश्तों को और जो भी उनके बीच था सब को आदेश हुआ कि आदम (के आदर सम्मान में उन) को सजदा करें।

(४) सब ने सजदा किया।

(५) इब्लीस ने सजदा नहीं किया।

(६) अल्लाह तआ़ला ने इब्लीस से सजदा न करने का करण पूछा।

(७) उसने घमण्ड का उत्तर दिया कि मैं अग्नि से यह मिट्टी से मैं इनसे श्रेष्ठ इस लिए मैंने इन को सजदा नहीं किया।

(८) अल्लाह तआ़ला ने उसकी अवज्ञा पर उसको वहां से निकल जाने का आदेश दे दिया।

(९) इब्लीस ने लम्बे जीवन अर्थात कियामत तक के जीवन की मांग की।

(१०) उसको क़ियामत तक की छूट दे दी गई।

(११) इब्लीस ने कसम खाई कि आदम और उनकी सन्तान को भटकाऊंगा।

(१२) अल्लाह तआ़ला ने अपना निर्णय सुनाया कि इब्लीस शैतान और उसके पीछे चलने वालों को जहन्नम में डाल दूंगा।

(१३) आदम अ़लैहिस्सलाम और उनकी पत्नी ह़व्वा को जन्नत में रहने और उससे आनन्द लेने की अनुमति दे दी।

(१४) इन दोनों सज्जनों को जन्नत के एक वृक्ष के पास जाने और उस से कुछ खाने को रोक दिया गया।

(१५) शैतान (इब्लीस) ने दादा आदम और दादी ह़व्वा (अ़लैहिमस्सलाम) को झूट बोलकर बहकाया और अपनी बात को सत्य सिद्ध करने के लिए झूटी कसम खाली।

(१६) हज़रत आदम और ह़ज़रत ह़व्वा से चूक हो गई और उन्होंने वर्जित (रोके गये) वृक्ष से कछ खा लिया।

(१७) वर्जित पेड़ से खाते ही दोनों वस्त्रहीन हो गये।

(१८) दोनों सज्जन वृक्ष के पत्तों से अपने लज्जा अंग छुपाने लगे।

(१९) अल्लाह तआ़ला ने दोनों से प्रश्न किया कि तुम को तो इस वृक्ष से रोका गया था और बता दिया गया था कि शैतान तुम्हारा दुश्मन है फिर तुम ने उसके विरुद्ध क्यों किया ?

(२०) दोनों ने बड़ी लज्जा से अपनी ग़लती मानी और क्षमता चाही ।

(२१) अल्लाह ने क्षमा कर दिया परन्तु आकाश की जन्नत से धरती पर उतरने का आदेश दिया।

(२२) साथ ही यह भी बता दिया कि तुम में से कुछ के दुश्मन रहेंगे।

(२३) अल्लाह तआ़ला ने आदम और ह़व्वा (अ़लैहिमस्सलाम) को बताया कि तुम को और तुम्हारी संतान को एक समय तक इसी धरती पर रहना फिर इसी पर मरना और फिर क़ियामत के दिन इसी से निकलना है।

इस घटना का वर्णन कुर्आन पाक में सात स्थान पर आया है। कहीं संक्षिप्त से कहीं विस्तार से। जब किसी घटना को दोहराते समय यदि कोई बात न दुहराई जाए तो बात समझने में कठिनाई नहीं होती परन्तु जब विस्तार करते हुए कुछ अधिक बातें लाई जाएं तो उनका महत्व होता है।

अतः पवित्र कुर्आन में जिन जिन स्थानों पर इस क़िस्से से सम्बन्धित अधिक बातें आई हैं उनका उल्लेख किया जा रहा है। :

सूर–ए–बकरा आयत ३४ से ३६

इब्लीस ने सजदा करने से इन्कार किया, घमण्ड किया वह काफ़िरों में से था।

इस आयत से यह बात भी समझ में आती है कि इब्लीस जिन्नों का पहला पुर्खा अर्थात पहला जिन्न न था उससे पहले भी जिन्न थे यह उन ही में से थो। उनमें मुसलमान भी थे और काफ़िर भी। इब्लीस ने अल्लाह का हुक्म न माना और काफ़िरों में से हो गया।

●●●

# औरतों की आज़ादी के नाम पर धोखा

सादिक़ा तस्नीम फ़ारूक़ी

इस बात को सही ढंग से मसझने से पहले एक महत्वपूर्ण बात की ओर आपको ध्यान दिलाना चाहूंगी वह यह बात है कि औरत के लिए 'शर्म' और 'पर्दा' क्यों ज़रूरी है? और इस्लाम में पर्दा करने का क्या हुक्म है, और यह बात उस समय तक ठीक–ठीक समझ में नहीं आ सकती जब तक यह मालूम न हो कि औरत के इस संसार में आने और उसके पैदा किये जाने का अस्ल उद्देश्य क्या हैं।

आज पश्चिम में प्रोपेगन्डा हर जगह किया जाता है कि इस्लाम के अन्दर औरत को नकाब और पर्दे में रख कर घूंट दिया जाता है उसको चार दीवारी के अन्दर कैद कर दिया जाता है, परन्तु यह सारा प्रोपेगन्डा वास्तव में इस बात का परिणाम है कि औरत को पैदा करने का अस्ल उद्देश्य मालूम नहीं, अगर इस बात पर ईमान है कि इस संसार को पैदा करने वाला अल्लाह है; इन्सान को पैदा करने वाले अल्लाह है, मर्द और औरत को पैदा करने वाले अल्लाह है अगर इस बात पर भी ईमान न हो तो वह मुसलमान कैसे रह सकता है, और इस ज़माने में जो अल्लाह के अस्तित्व पर ईमान नहीं रखते और इस्लाम के विरोधी प्रति दिन आगे बढ़ते जा रहे हैं, उनको भी अल्लाह ऐसी निशानियां और आसार दिखा रहे हैं, जिससे वह भी अल्लाह के अस्तित्व को मानने लगे।

परन्तु अगर अल्लाह पर ईमान है और यह पता है कि अल्लाह ने इस संसार को पैदा किया है और मर्द को भी उसी ने पैदा किया और औरत को भी उसने पैदा किया अब पैदाइश का उद्देश्य भी उसी से पूछना चाहिए कि मर्द को क्यों पैदा किया, और औरत को क्यों पैदा किया और दोनों के पैदाइश का अस्ल उद्देश्य क्या है ?

पश्चिम में यह नारा आज बहुत ज़ोर व शोर से लगाया जा रहा है कि औरतों को भी मर्दों के साथ मिल जुल कर काम करना चाहिए और पश्चिम ने यह प्रोपेगन्डा सारे संसार में कर दिया है, परन्तु यह नहीं देखा कि अगर मर्द और औरत दोनों एक ही जैसे काम के लिए पैदा हुए थे, तो फिर दोनों को शारीरिक ढंग पर अलग–अलग पैदा करने की क्या ज़रूरत थी? मर्द का स्वभाव और है, और औरत का स्वभाव और है मर्द की योग्यताएं और हैं, और औरत की योग्यताएं और हैं, अल्लाह तआ़ला ने दोनों को इस प्रकार बनाया है कि दोनों की पैदाइशी बनावट और उसकी व्यवस्था में बहुत अन्तर पाया जाता है।

हां यह बात कहना कि मर्द और औरत में किसी प्रकार का कोई अन्तर नहीं है, यह खुद नेचर के विरुद्ध विद्रोह है औरत की बनावट में अन्तर है, नए फैशन ने मर्द और औरत के इस नेचर को मिटाने की कितनी कोशिशें करके देख ली, अतः औरत ने मर्दों जैसा कपड़ा पहनना शुरू कर दिया और मर्दों ने औरतों जैसा कपड़ा पहनना शुरू कर दिया और मर्दों ने औरतों जैसे बाल रखने शुरू कर दिये, परन्तु इस बात से इन्कार अब भी नहीं किया जा सकता कि मर्द और औरत दोनों की शारीरिक व्यवस्था अलग अलग हैं, और दोनों की योग्यताएं अलग हैं।

परन्तु यह किससे मालूम किया जाए कि मर्द क्यों पैदा किया गया और औरत को क्यों पैदा किया गया,? यह बात अच्छी तरह मालूम है कि इसका जवाब यही होगा, कि जिस अल्लाह ने पैदा किया है उससे पूछो कि आपने मर्द को किस उद्देश्य से पैदा किया? औरत को किस उद्देश्य से पैदा किया? हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और हज़राते अंबिया (अ०) के द्वारा इस बात का पता कीजिए।

कुर्आन मजीद की शिक्षाएं और रसूल सल्ल० की शिक्षाओं से किसी थोड़े सन्देह के बिना यह बात सिद्ध होती है कि वास्तव में इन्सानी ज़िन्दगी दो अलग अलग भागों में बंटी है, एक घर के अन्दर का भाग है, और एक घर के बाहर का, यह दोनों भाग ऐसे हैं कि उन दोनों को साथ लिए बिना एक अच्छा और सन्तुलित जीवन नहीं गुज़ारा जा सकता, घर का प्रबन्ध भी जरूरी है, घर के बाहर रोज़ी कमाना भी ज़रूरी है, जब दोनों काम एक साथ अपनी–अपनी जगह पर बराबर चलेंगे तब ही इन्सान का घरेलू जीवन अच्छे तरीक़े से चलेगा।

इन दोनों के लिए अल्लाह ने यह फ़रमाया है कि मर्द के लिए घर के बाहर का काम जैसे रोज़ी कमाना, राजनीतिक और सामाजिक आदि, यह सारे काम वास्तव में मर्द के अधिकार में हैं और घर का काम अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० ने औरतों के अधिकार में रखा है, तो वह इसको सही तरीक़े से निभाती रहें। अगर अल्लाह की ओर से यह हुक्म आ जाता कि औरत बाहर काम करे और मर्द घर का काम करे तो उसमें भी किसी को बोलने की हिम्मत न होती, बाहर का काम मेहनत का होता है, इसलिए मर्द के अधिकार में रखा गया है, और औरत मर्द से कमज़ोर होती है इसलिए उसके अधिकार में घर का काम रखा गया है।

"हज़रत अली रज़ि० और फ़ातिमा ने भी काम को बांट लिया था, हज़रत अली रज़ि० बाहर का काम करते और हज़रत फ़ातिमा रज़ि० घर का काम करतीं जैसे चक्की चला कर आटा पीसतीं, पानी भरतीं, खाना पकातीं, घर में झाड़ू देतीं आदि।"

अल्लाह ने हुज़ूर सल्ल० की पत्नियों से फरमाया और उनके द्वारा सारी मुसलमान औरतों से फरमाया कि तुम अपने घर में इज्ज़त से रहो, इसमें केवल इतनी बात नहीं कि औरत को ज़रूरत के बिना घर से बाहर नहीं जाना चाहिए,

परन्तु जिस समाज में औरत की कोई इज़्ज़त ही न हो और इज़्ज़त का कोई विचार ही न हो तो पर्दा को ग़लत ही समझा जाएगा, अतः पश्चिम में चारों ओर से औरत के आज़ादी का नारा लगा तो मर्द ने औरत के घर में रहने को अपने लिए दोहरी मुसीबत समझा, और एक बोझ समझने लगा, अतः इसका सुन्दर नाम "औरत के आज़ादी का आन्दोलन" और औरत को यह बताया गया कि तुम चार दीवारी में कैद थीं, अब आज़ादी मिली है तो क़ैद के बाहर आओ और मर्दों के क़दम में कदम मिलाओ, और आगे बढ़ो और अभी तक तुम को सत्ता और राजनीतिक से दूर रखा गया था, आओ और बाहर के जीवन का मर्दों के बराबर भाग लो।

और बेचारी यह नारा सुनकर बाहर आ गयी और प्रोपेगन्डा के द्वारा शोर मचा कर उसे यह याद दिलाया गया कि उसे वर्षों बाद आजादी मिली है और अब उसके दुख दूर हो गये इन धोखेबाज़ नारों की आड़ में औरत को घसीट कर सड़कों पर लाया गया, उसे अपरिचित मर्दों के प्राइवेट सेक्रेट्री का अधिकार दिया गया, उसे व्यापार चमकाने के लिए "सील्ज़ गर्ल्स" और "माडल गर्ल्स" बनाया गया, और उसे बाजारों में बिठा के गाहकों को बुलाया गया कि आओ हमसे माल खरीदो, सच तो यह है कि इस्लाम ने औरत को इज़्ज़त दी थी परन्तु आज एक आज़ाद औरत व्यापारी कामों में एक शो पीस और मर्दों की थकन दूर करने के लिए एक मनोरंजन का ज़रिया बन कर रह गयी है।

## नमाज़ से सम्बन्धित

बच्चा अगर नमाज़ पढ़ते समय मां का दुपट्टा सर से उतार दे तो मां अगर तुरन्त ओढ़ ले तो कोई ह़रज़ न होगा, लेकिन अगर तीन बार सुबहानल्ला कहने के समय तक सर खुला रहा तो नमाज़ टूट जाएगी।

## अमरीका में मुसलमान

एक सर्वे के अनुसार अमेरिका में अधिकतर मुसलमान दूसरे देशों से वहां जाकर बसे और वहां के नागरिक बन गये। मुसलमानों में ऐसे लोग ७७.६ फीसद हैं, जबकि अमेरिका मूल के लोग २२.४ फीसद। इनका वर्गीकरण कुछ इस तरह किया जाता है–मध्य पूर्व (अरब) २६.२ (गैर अरब)–१०.३ प्रतिशत, दक्षिण ऐशिया–२४.७प्रतिशद अफ्रीकी अमेरिकी –२३.८ पूर्व ऐशिया–६.४ प्रतिशत और अन्य ११.६ प्रतिशत। एक सर्वेक्षण में पाया गया है कि २०वीं सदी में अमेरिका से सबसे अधिक मुसलमान तुर्की, लेबनान और सीरिया से गये। अमेरिका में लगभग दो हजार मस्जिदें हैं और बड़ी संख्या में मदरसे और मुसलमानों के शिक्षालय हैं। अमेरिका में क्षेत्रवार मुसलमानों की स्थिति इस प्रकार है–ईस्ट कोस्ट में ३२.२ प्रतिशत, साउथ में २५.३, सेन्ट्रल/ग्रेट लेक्स क्षेत्र में २४.३ और वेस्ट में १८.२ प्रतिशत। (कान्ति के शुकिये के साथ)


## उर्दू में कुछ लाभदायक किताबें

हुस्ने मुआशरत, ज़ाइक़ा कलीद बाबे रहमत, ज़िक्रे ख़ैर, हमारे हुज़ूर, इस्लाम ईमान इह़सान

मिलने का पता :

मकतबा–ए–इस्लाम

५४/१७२ मुहम्मद अली लैन गोइन रोड लखनऊ

# आपकी समस्याएं और उनका हल

मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

**प्रश्न** : *मेज़ कुर्सी पर खाना खाना कैसा है ?*

**उत्तर** : मेज़ व कुर्सी पर खाना खाना जाइज़ है, शरीअ़त ने इन मामलात में बड़ी छूट रखी है मगर सुन्नत के खिलाफ़ है, कि रसूलुल्लाहि सल्ल० का तरीक़ा टेक न लगाने का था, आप सल्ल० ने खुद फ़रमाया है कि "मैं टेक लगा कर नहीं खाता हूं।" (बुख़ारी)

कुर्सी में टेक की शक्ल होती है जो सुन्नत के ख़िलाफ़ है और इस लिए भी कि हदीसों में आता है कि हुजूर सल्ल० खाने के वक़्त बहुत इन्किसारी अपनाते थे और कुर्सी मेज़ पर तो बड़ाई का इज़हार होता है यही हुक्म तख्त या चौकी सामने उस पर खाना रख कर खाने का भी है।

**प्रश्न** : *चमचे, कांटों से खाना खाना कैसा है ?*

**उत्तर** : चम्चों और कांटों से खाना और बिना ज़रूरत उन का ख़ास तौर से कांटों का इस्तेमाल करना सुन्नत के खिलाफ़ है "हुजूर सल्ल० हाथों से खाना खाया करते थे और खाने के बाद उंगलियां चाटते भी थे।"

(मुस्लिम शरीफ़ भाग–२–१७५)

"गोश्त काटने के बजाए खींच कर खाया करते थे" (तिर्मिजी भाग २–५)

आप सल्ल० छुरी के इस्तेमाल को नापसंद फरमाते थे। "गोश्त को छुरी से न काटो इस लिए कि यह अजमियों का तरीक़ा है इसे खींच कर खाया करो, यह ज़ियादा लज़्ज़त और खुश जायक़ा होगा।"

(अबूदाऊद भाग २–५३०)

हां किसी ज़रूरत की बिना पर खाए तो कुछ हर्ज नहीं रिवायत में है।

"आप (सल्ल०) के हाथ में बकरी का शाना (रान) था जिसे काट कर खा रहे थे । नमाज़ के लिए बुलाया गया तो उसको, और छुरी को जिससे काट रहे थे रख दिया। (बुख़ारी भाग २–८१४)

**प्रश्न** : *बफ़े सिस्टम (Baffay System) आज कल खाने में लोग अच्छा समझते हैं यह कैसा है ?*

**उत्तर** : आजकल जो यह सिस्टम है कि मेज पर खाना रख दिया जाता है और लोग खड़े होकर अपने–अपने बरतनों में ज़रूरत के मुताबिक़ खाने की चीज़ ले कर खाते हैं उसको बफे सिस्टम कहा जाता है यह तरीक़ा गैर इस्लामी भी है, और गैर मुहज्ज़ब भी, हदीस की किताबों में तफ़सील से वह रिवायतें मौजूद हैं जिन में हुजूर सल्ल० के खाने का मुफस्सल तरीक़ा मौजूद है। जिसमें आप (सल्ल०) से खड़े होकर खाना साबित नहीं है, बल्कि कुछ अहादीस में खड़े होकर पीने की मुमानिअ़त है। (मुस्लिम शरीफ़)

दूसरी बात यह है कि गैर इस्लामी तरीक़े को इस्लामी तहज़ीब पर बढ़ावा देना है और यह ख़तरनाक मर्ज़ है। जो इस्लाम पर ईमान व यक़ीन को कमज़ोर करता है। इसलिए इससे बचना चाहिए।

**प्रश्न** : *कबूतर बाज़ी व पतंग बाज़ी क्या हुक्म है ?*

**उत्तर** : हुजूर (सल्ल०) ने कबूतर बाज़ी को ना पसंदीदगी की नज़र से देखा है, कबूतर के पीछे दौड़ते हुए एक शख़्स के बारे में आप ने फ़रमाया "शैतान, शैतान के पीछे दौड़ रहा है।"

(अबू दाऊद भाग २–६७५)

पतंग बाज़ी को भी इसी तरह समझा जा सकता है और अगर इसके साथ जुआ और शर्तें भी दोनों तरफ से हों तो हराम हो जाएगा।

**प्रश्न** : *आज कल जानवरों पर मेडिकल रिसर्च होती है और पहले जानवर के अन्दर जरासीम दाखिल किये जाते हैं जो उसके अन्दर मर्ज को पैदा कर दें फिर आज़माया जाता है कि कौन सी दवा फाइदा करेगी तो इस तरह जानवरों का इस्तेमाल करना कैसा है ?*

**उत्तर** : कुछ दवाओं के असरात और फाइदों का तज़रिबा करने के लिए जानवरों के साथ उल्लिखित व्यवहार जाइज़ है।

बेशक इस्लाम ने जानवरों को तकलीफ़ देने और उनको केवल तफ़रीह़ के लिए परेशान करने की इजाज़त नहीं देता लेकिन दूसरी तरफ उसने उस तसव्वुर को भी पेश किया है कि दुन्या के तमाम चीज़ें इन्सान की ख़िदमत के लिए पैदा की गई है इसी

लिए जानवरों की सवारी, उनके गोश्त को गिज़ा, चमड़ों को लिबास और किसी इन्सानी अंग की सेहत के लिए उसके जिस्म में पेवन्द कारी की इजाज़त है।

इसमें चूंकि तफ़रीह और बे मक़सद तकलीफ़ देना नहीं है बल्कि इन्सान की एक ज़रूरत के लिए उनसे ख़िदमत लेना और फ़ाइदा उठाना अस्ल है इस लिए इसमें कोई हर्ज नहीं मालूम होता।

**प्रश्न** : *क्या नामों का रजिस्ट्रेशन सहीह है ?*

उत्तर : नामों के रजिस्ट्रेशन की शक्ल इस तरह होती है कि कोई इदारा अपने नाम को क़ानूनी तौर से महफ़ूज़ कर लेता है अब दूसरों के लिए उस नाम से फ़ाइदा उठाने की गुंजाइश बाक़ी नहीं रहती जिसे गुडविल कहते हैं। इस तरह हक़ महफ़ूज़ करना दुरुस्त होगा क्योंकि उस से अपने फाइदे की हिफाज़त होती है अ़वाम को धोका धड़ी से बचाया जा सकता है कि अगर ऐसा न हो तो दूसरे लोग इस नाम का ग़लत इस्तेमाल करके उसको नुकसान पहुंचा सकते हैं और अवाम को धोका भी दे सकते हैं कि लोग जिस कम्पनी की चीज़ों को पसंद करते हों उस का नाम लेकर नकली और घटिया माल उनको दिया जाय। इस तरह रजिस्ट्रेशन नामों का जाइज़ है।

**प्रश्न** : *क्या रूपया भुनाने में बट्टा लेना जाइज़ है ?*

**उत्तर** : रू० भुनाने में दोनों लोगों की तरफ़ से रक़म होती है हां एक शख़्स बड़ी रक़म का नोट या सिक्का देता है और दूसरा उसी क़ीमत के छोटे सिक्के या नोट देता है जिसमें क़ानूनी कदर व क़ीमत होती है इसलिए फिक: की ज़बान में यह "समन" की बैअ़ "समन" से हुई जिस को "बैअ़ सरफ़" कहा जाता है।

और बैअ़ सरफ़ का तरीक़ा यह है कि किसी फ़रीक़ की तरफ़ से कमी ज़ियादती नहीं हो सकती । अगर एक तरफ़ से ज़ियादा और दूसरी तरफ़ से कम हो तो सूद कहलाएगा जो हराम है। इस लिए रू० भुनाते हुए उसमें से कुछ बट्टा काट लेना बिल्कुल जाइज़ नहीं है और सूद में दाख़िल है।

**प्रश्न** : *पोस्टल बीमा कैसा है ?*

**उत्तर** : बीमा की एक शक्ल पोस्टल बीमा की भी है। बीमा के ज़रिए रू० और अहम काग़ज़ात एक जगह से दूसरी जगह भेजे जाते हैं और पोस्ट आफिस उसकी हिफ़ाज़त का ज़िम्मेदार होता है– यह सूरत बीमा कहलाती है लेकिन अपनी रूह के एतिबार से रक़म और काग़ज़ात पहुंचाने की उजरत है और जाइज़ काम पर उजरत का लेना और देना दोनों ही जाइज़ है इस लिए इसमें कोई क़बाहत नहीं।

## नमाज़ न होगी

औरत अगर ऐसा बारीक दुपट्टा ओढ़कर नमाज़ पढ़े जिस से सर के बाल नज़र आएं तो नमाज़ न होगी। इसी प्रकार बारीक कमीज़ से औरत का बदन झलकेगा तो उस की नमाज़ न होगी। नमाज़ में जोर से हंसने से नमाज़ टूट जाएगी और ठट्ठा लगा कर हंसने से नमाज़ व वुज़ू दोनों टूट जाएंगे।

## स्वीकार नहीं

*कारी हिदायतुल्लाह सिद्दीकी*

अपने प्रति हम सब को रूलायें,
यह तो हमें स्वीकार नहीं।
दुख सुख में हम काम न आयें,
यह तो हमें स्वीकार नहीं।।
मानव जाति हैं भाई भाई,
आदम की सन्तान।
लूटें, घर में आग लगायें,
यह तो हमें स्वीकार नहीं।।
मानव की हम हत्या करके,
धरती लाल बनायें।
रक्त से अपने हाथ यह रंगे,
यह तो हमें स्वीकार नहीं।।
मस्जिद तोड़ें मंदिर तोड़ें,
धर्म से हटते जायें ।
ईश्वर के गुण कभी न गायें,
यह तो हमें स्वीकार नहीं।।
पाप करें और पाप बढ़ायें,
पुण्य पास न जायें।
हिंसा को परवान चढ़ायें,
यह तो हमें स्वीकार नहीं।।
फुंकता देखें घर और आंगन,
फूंके यह संसार ।
आतंकी को आगे बढ़ाएं,
यह तो हमें स्वीकार नहीं।।
देख देख कर यह सब अपना,
हृदय व्याकुल होय।
चुप्पी साधे चुप रह जायें,
यह तो हमें स्वीकार नहीं।।
न्याय का कोई चिन्ह,
न पायें न्याय हीन संसार ।
ईश्वर से न रोएं गायें,
यह तो हमें स्वीकार नहीं।।
श्रम की रोटी खा के हिदायत,
गहरी निद्रा सोता है।
छीन झपट के रोटी खाएं,
यह तो हमें स्वीकार नहीं।।

# नास्तिक और अन्ध विश्वास

कुछ लोग यह नहीं मानते कि इस संसार को बनाने और चलाने वाली कोई ऐसी शक्ति है जिस के आदेश से सब कुछ होता है। और मानव जीवन यापन के लिए उस ने विशेष आदेश दिये हैं। जिन का उल्लंघन करने वालों को वह शक्ति दण्ड देती है तथा आज्ञापालन करने वालों को पुरस्कारित करती है जिसे धर्म वाले विभिन्न नामों जैसे अल्लाह, गाड, ईश्वर से पुकारते हैं ऐसे लोग जो इस सत्य को नहीं मानते नास्तिक कहलाते हैं।

उनका कहना है कि हर तत्व में एक शक्ति है उसी शक्ति से संसार स्वतः चल रहा है। इस विषय पर हम अगले अंक में चर्चा करेंगे यहां केवल नास्तिकों का परिचय देना चाहते हैं। ऐसे लोग परोक्ष की किसी भी बात को अन्ध विश्वास कह देते हैं। वह जब खुदा (ईश्वर) की बात को अन्ध विश्वास कह देते हैं। वह जब खुदा (ईश्वर) ही को नहीं मानते तो उनके निकट फ़िरिश्ते, जिन्न, शैतान, जन्नत, जहन्नम, कि़यामत, हि़साब किताब सब अंधविश्वास है। जबकि धर्म वाले ऐसी बहुत सी बातों और चीजों पर विश्वास रखते हैं जो मानव दृष्टि तथा अनुभव से परे हैं।

वास्तव में अन्धविश्वास वह है जो मानव दृष्टि तथा बुद्धि से परे हो साथ ही किसी सत्य धर्म से सिद्ध न हो । समस्त आसमानी धर्म सत्य धर्म हैं परन्तु उन में से केवल इस्लाम मिलावट रहित है अतः परोक्ष की जो बातें इस्लाम में नहीं बताई गईं उन पर विश्वास अन्धविश्वास है।

कोई बीमारी है उसे आसेब (भूत प्रेत का प्रभाव) मानना, टोने टोटके और चढ़ावे से उसका इलाज करना, दवाओं का इलाज छोड़रक दुन्या कमाने वाले झूटे आमिलों और ओझाओं के चक्कर में रहना, बिल्ली के रासता काटने, किसी के छींकने, काने के सामने आजाने जैसी बातों से बुरे शगून लेना यह सब अन्ध विश्वास में से है। ऐसे अन्धविश्वासों से बचना आवश्यक है। अन्धविश्वास से बचाने की हिन्दू विद्वानों ने भी कोशिश की है आज हम स्वामी दयानन्द की सत्यार्थ प्रकाश से ऐसी ही कुछ बातें प्रस्तुत कर रहे हैं, वह लिखते हैं –

अज्ञानी लोग वैद्यक शास्त्र वा पदार्थविद्या के पढ़ने, सुनने और विचार से रहित होकर सन्निपातज्वरादि शारीरिक और जन्मादादि मानस रोगों का नाम भूत प्रेतादि धरते हैं। उनका औषधसेवन और पथ्यादि उचित व्यवहार न करके उन धूर्त, पाखण्डी, महामूर्ख, अनाचारी, स्वार्थी, भंगी, चमार, शूद्र, मलेच्छादि पर भी विश्वासी होकर अनेक प्रकार के ढोंग, छल कपट और उच्छिष्ट भोजन, डोरा, धागा आदि मिथ्या मंत्र बांधते बंधवाते फिरते है।, अपनेधन का नाश सन्तान आदि की दुर्दशा और रोगों को बढ़ा कर दुःख देते फिरते हैं। अब आंख के अंधे और गांठ के पूरे उन दुर्बुद्धि पापी स्वार्थियों के पास जाकर पूछते हैं कि 'महाराज ! इस लड़का, लड़की, स्त्री और पुरुष को न जाने क्या हो गया है ?' तब वे बोलते हैं कि 'इसके शरीर में बड़ा भूत, प्रेत, भैरव, शीतला आदि देवी आ गई है, जब तक तुम इसका उपाय न करोगे तब तक ये न छूटेंगे और प्राण भी लेलेंगे। जो तुम मलीदा व इतनी भेंट दो तो मंत्र जब पुरश्चरण के झाड़ के इनको निकाल दें। तब वे अन्धे और उनके सम्बन्धी बोलते हैं कि 'महाराज ! चाहे हमारा सर्वस्व ले जाओ परन्तु इनको अच्छा कर दो, तब तो उनकी बन पड़ती है वै धूर्त कहते हैं लाओ इतनी सामग्री इतनी दक्षिणा देवता को भेंट और ग्रहदान कराओ। झांझ, मृदंग, ढोल, थाली, लेके उसके सामने बजाते गाते और उनमें से एक पाखण्डी उन्मत्त होके नाच कूद के कहता है मैं तो इसका प्राण ही ले लूंगा तब वह अन्धे उस नीच के पगों में पड़ के कहते हैं 'आप चाहें सो लीजिए इसको बचाइये। तब वह धूर्त बोलता है मैं हनुमान हूं, लाओ पक्की मिठाई, तेल, सिन्दूर, सवामन का रोट और लाल लंगोट। मैं देवी वा भैरव हूं लाओ पांच बोतल मद्य, बीस मुर्गी, पांच बकरे, मिठाई और वस्त्र'। जब वे कहते हैं कि 'जो चाहो सो लो' तब तो वह पागल बहुत नाचने कूदने लगता है परन्तु जो कोई बुद्धिमान् उनकी भेंट 'पांच जूता, डंडा वा चपेटा, लातें मारे' तो उसके हनुमान, देवी और भैरव झट प्रसन्न होकर भाग जाते हैं। क्योंकि वह उनका केवल धनराशि के हरण के प्रयोजनायें ढोंग हैं।

और जब किसी ग्रहग्रस्त ग्रहरूप ज्यातिर्विदाभास के पास जाके वे कहते हैं – हे महाराज ! इसको क्या है?' तब वे कहते हैं कि 'इस पर सूर्यादि क्रूर ग्रह चढ़ते हैं। तो तुम इनकी शान्ति, पाठ, पूजा, दान कराओ तो इसको सुख हो जाय, नहीं तो बहुत पीड़ित होकर मर जाय तो भी आश्चर्य नहीं।'

कहिए ज्योतिषी जी ! जैसी यह पृथ्वी जड़ है वैसे ही सूर्यादि लोक हैं, वे ताप और प्रकाशादि से भिन्न कुछ भी नहीं कर सकते। क्या ये चेतन हैं जो क्रोधित होके दुःख और शान्त होके सुख दे सकें ?

प्रश्न : क्या जो यह संसार में राजा प्रजा सुखी दुःखी हो रही हैं यह ग्रह का फल नहीं है ?

उत्तर : नहीं, ये सब पाप पुण्यों के फल हैं ।

प्रश्न : तो क्या ज्योतिषशास्त्र झूठा है ?

उत्तर : नहीं जो उसमें अंक, बीज, रेखागणित विद्या है वह सब सच्ची, जो फल की लीला है वह सब झूठी है।

प्रश्न : क्या जो वह जन्मपत्र है सो निष्फल है ?

उत्तर : हां वह जन्मपत्र नहीं किन्तु उसका नाम 'शोकपत्र' रखना चाहिए क्योंकि जब सन्तान का जन्म होता है तब सबको आनन्द होता है। परन्तु यह आनन्द तब तक होता है जब तक जन्मपत्र उनके ग्रहों का फल न सुने। जब पुरोहित जन्मपत्र बनाने को कहता है तब उसके माता, पिता पुरोहित से कहते हैं 'महाराज'। आप बहुत अच्छा जन्मपत्र बनाइये' जो धनाड्य हो तो बहुत सी लाल पीली रेखाओं से चित्र विचित्र और निर्धन हो तो साधारण रीति से जन्मपत्र बनाके सुनाने को आता है। तब उसके मां बाप ज्योतिषी जी के सामने बैठ के कहते हैं 'इसका जन्मपत्र अच्छा तो है? ज्योतिषी कहता है जो है सो सुना देता हूं। इसके जन्मग्रह बहुत अच्छे और मित्रग्रह भी बहुत अच्छे हैं जिनका फल धनाड्य और प्रतिष्ठावान्, जिस सभा में जो बैठेगा तो सबके ऊपर इसका तेज पड़ेगा। वाह ज्योतिषी जी। आप बहुत अच्छे हो। ज्योतिषीजी समझते हैं इनबातों से कार्य सिद्ध नहीं होता । तब ज्योतिषी बोलता है कि ये ग्रह तो बहुत अच्छे हैं परन्तु ये ग्रह क्रूर हैं अर्थात् फलाने फलाने ग्रह के योग से ८ वर्ष में इसका मृत्युयोग है। इसको सुन के माता पितादि पुत्र के जन्म में आनन्द को छोड़ के शोकसागर में डूब कर ज्योतिषी से कहते हैं महाराज जी अब हम क्या करें? तब ज्योतिषी जी कहते हैं उपाय करो। गृहस्थ पूछे क्या उपाय करें। ज्योतिषी जी प्रस्ताव करने लगते हैं कि ऐसा–ऐसा दान करो। ग्रह के मन्त्र का जप कराओ और नित्य ब्राहमणों को भोजन कराओ तो अनुमान है कि नवग्रहों के विघ्न हट जाएंगे अनुमान शब्द इसलिए है कि जो मर जायेगा तो कहेंगे हम क्या करें परमेश्वर के ऊपर कोई नहीं है। हमने तो बहुत सा यत्न किया और तुमने कराया, उसके कर्म ऐसे ही थे। और जो बच जाये तो कहते हैं कि देखो–हमारे मंत्र, देवता और ब्रहमणों की कैसी शक्ति है? तुम्हारे लड़के को बचा दिया। यहां यह बात होनी चाहिए कि जो इनके जप के पाठ से कुछ न हो तो दूने तिगुने रूपये धन धूर्तों से ले लेने चाहिए और बच जाये तो भी ले लेना चाहिए क्योंकि जैसे ज्योतिषियों ने कहा कि 'इसके कर्म और परमेश्वर के नियम तोड़ने का सामर्थ्य किसी का नहीं वैसे गृहस्थ भी कहें कि यह अपने कर्म और परमेश्वर के नियम से बचा है तुम्हारे करने से नहीं और तीसरे गुरू आद की पुण्य दानकरा के आप ले लेते हैं तो उनको भी वही उत्तर देना, जो ज्योतिषियों को दिया था।

अब रह गई शीतला और मंत्र तंत्र यंत्र आदि। ये भी ऐसे ही ढोंग मचाते हैं। कोई कहता है कि जो हम मंत्र पढ़ के डोरा वा यंत्र बना देंवे तो हमारे देवता और पीर उस मंत्र यंत्र के प्रताप से उसको कोई विघ्न नहीं होने देते।' उनको वही उत्तर देना चाहिए कि क्या तुम मृत्यु, परमेश्वर के नियम और कर्मफल से भी बचा सकोगे ? तुम्हारे इस प्रकार करने से भी कितने ही लड़के मर जाते हैं और तुम्हारे घर में भी मर जाते हैं और क्या तुम मरण से बच सकोगे ? तब वे कुछ भी नहीं कह सकते और धूर्त जान लेते हैं कि यहां हमारी दाल नहीं गलेगी। इससे इन सब मिथ्या व्यवहारों को छोड़ कर धार्मिक, सब देश के उपकारकर्ता, निष्कपटता से सबको विद्या पढ़ाने वाले, उत्तम विद्वान लोगों का प्रत्युपकार करना जैसे वे जगत् का उपकार करते हैं इस काम को कभी न छोड़ना चाहिए। और जितनी लीला रसायन, मरण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण आदि करना कहते हैं उनको भी महापामर समझना चाहिए।

बजा औलिया की करामात है।
नुजूमी की झूठी हर इक बात है।।

# त्याग एवं दानशीलता के उच्च नमूने

डा० इज्तिबा नदवी

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० उन आठ मुसलमानों में से एक थे जो सबसे पहले इस्लाम लाए और उन दस में से एक थे, जिनको नबी सल्ल० ने जन्नत की शुभ सूचना सुनाई। वे उन छः सहाबा में से एक थे जिन को अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर फारूक़ रज़ि० ने इसलिए नामांकित किया था कि वे अपने में से किसी एक को अगला खलीफा चुन लें। अपने उत्तराधिकारी के लिए नामांकित इन छः में जनाब अब्दुर्रहमान को कन्वीनर बनाया और उन्हीं की कोशिश व निगरानी में हज़रत उमर के बाद हज़रत उसमान रज़ि० का तीसरे खलीफ़ा के रूप में चुनाव हुआ।

अल्लाह ने उन्हें उनके व्यापार से मक्का में बहुत अधिक माल व धन प्रदान किया था, मगर सब कुछ छोड़ कर खुदा के मार्ग में अपने प्रिय रसूल सल्ल० के साथ जीवन बिताने और दीन के प्रचार, प्रसार के लिए मदीना हिजरत की। जब मदीना मुनव्वरा पहुंचे तो नबी करीम सल्ल० ने उनके और हज़रत सअ़द बिन रबीअ़ अन्सारी के बीच भाई–भाई का सम्बन्ध स्थापित करा दिया। हज़रत सअ़द उनको अपने घर ले गए और उनसे कहा कि मैं मदीना के धनी लोगों में से हूं। मेरे पास दो बाग़ हैं और दो पत्नियां हैं। तुम्हें जो बाग़ पसन्द हो वह तुम्हारा है और जो पत्नी पसन्द हो उसे मैं तलाक़ दे दूंगा ताकि तुम उससे शादी कर लो।

हज़रत अब्दुर्रहमान ने अपने अन्सारी भाई को जवाब दिया : अल्लाह तुम्हारे माल और घर वालों में बरकत प्रदान करे, तुम तो बस मुझे बाज़ार का रास्ता बता दो। (अर्थात मदीना के व्यापारियों, व्यापार की उचित वस्तुओं और यहां के बाज़ार की ऊंच नीच से परिचित करा दो) अतएव वे बाजार गए। उनके पास व्यापार के अनुभव के अलावा कुछ न था। ऊंटों का व्यापार शुरू किया। एक ऊंट का भाव किया और थोड़े से लाभ से बेच दिया। कमाने का सिलसिला शुरू हो गया। उसके बाद व्यापार में इतना धन कमा लिया कि एक महिला का महर अदा करें। अतः शादी का सन्देश दिया। शादी की, और दूसरे दिन नबी सल्ल० की सेवा में खुश्बू लगाकर हाज़िर हुए। आपने फ़रमाया अब्दुर्रहमान क्या बात है ? कहा कि मैंने शादी कर ली। फ़रमाया कि अपनी पत्नी को क्या महर दिया ? कहा कि एक गुठली के बराबर सोना। फ़रमाया : अल्लाह तुम्हारे माल में बरकत प्रदान करे। वलीमः कर डालो चाहे एक बकरी जब्ह करो। हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० बयान करते हैं कि नबी सल्ल० की दुआ की बरक़त से धन दौलत की भरमार हो गयी। यहां तक कि मुझे लगा कि यदि मैं पत्थर उठाऊं तो उसके नीचे भी चांदी और सोना मिलेगा।

अल्लाह ने जिस प्रकार उन पर धन दौलत की वर्षा की थी, हज़रत अब्दुर्रहमान ने भी उसी प्रकार खुले दिल के साथ खुदा की राह में ख़र्च किया। नबीए अकरम सल्ल० ने एक जिहादी दस्ता भेजने का इरादा किया तो उसकी तैयारी के लिए दो हजार दीनार दिए। जंग तबूक के अवसर पर दो सौ औक़िया सोना दिया। हुज़ूर सल्ल० के बाद आपकी पवित्र पत्नियों की सब से अधिक देख भाल और ख़र्चों की ओर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने ही ध्यान दिया।

जब उन में से कोई हज का इरादा करतीं तो न केवल खर्च का प्रबन्ध करते, बल्कि स्वयं साथ जाते। एक बार अपनी एक ज़मीन चालीस हजार दीनार में बेची और इसे नबी सल्ल० की माता जनाब आमिना बिन्त वहब के घराना बनू ज़ोहरा पर और आप की पाक पत्नियों पर खर्च किया। जब हज़रत आएशा रज़ि० की सेवा में उनका हिस्सा पहुंचा तो पूछा यह किसने भेजा है ? कहा, अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने। फ़रमाया कि नबी सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया है कि मेरे बाद तुम लोगों के साथ सद्–व्यवहार और अच्छा बर्ताव अपनी जगह दृढ़ता के साथ रहने वाले लोग ही करेंगे।

एक बार हज़रत अ़ब्दुर्रहमान का सात सो ऊंटों का एक तिजारती क़ाफ़िला मदीना पहुंचा। पूरे शहर में चहल पहल और इसकी चर्चा हो गयी। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा रज़ि० ने शोर सुनकर मालूम किया कि कैसा शोर है? उनको बताया गया कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० के सात

सौ ऊंट अनाज और दूसरा खाने पीने का सामान लेकर मदीना में दाखिल हुए हैं।

आपने फ़रमाया कि अल्लाह ने उन्हें संसार में जो कुछ दिया है उसमें बरकत प्रदान करे। अलबत्ता आख़िरत का सवाब अधिक है। मैंने नबी सल्ल० से सुना है फ़रमाया कि अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० जन्नत में बैठकर दाख़िल होंगे। ऊंटों के बैठने से पहले पहले हज़रत आएशा का यह वाक्य अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० के कानों तक पहुंच गया। वे तुरन्त हज़रत आएशा रज़ि० की सेवा में उपस्थित हुए और कहा कि ऐ उम्मुल मोमिनीन ! क्या आपने यह बात नबी सल्ल० से सुनी है?'' आपने फरमाया हां, मैंने सुनी है।' आप ख़ुशी से झूम उठे और कहा कि काश मैं जन्नत में खड़े होकर ही दाखिल हो सकता। इसके बाद अत्यन्त प्रसन्नता और विशाल हृदयता के साथ कहाः उम्मुल मोमिनीन! मैं आपको गवाह बनाकर ये सारे ऊंट उनके पूरे सामान सहित खुदा की राह में देता हूं।'

हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० ने हज़रत आएशा रज़ि० से यह हदीस सुनने के बाद सदका व दान करने में कई गुना वृद्धि कर दी। एक बार चालीस हज़ार दिरहम चांदी और एक बार चालीस हजार दीनार सोना और उसके बाद चालीस औक़िया सोना खुदा की राह में खर्च किया। एक अवसर पर पांच सौ घोड़े ख़ुदा की राह में जिहाद करने वालों को भेंट किए। एक दूसरे जिहाद के अवसर पर डेढ़ हज़ार सवारिय मुजाहिदों को प्रदान कीं। अपने देहान्त से पहले अपने बहुत से गुलामों को आज़ाद कर दिया। बदर वालों में से सौ सहाबा जीवित थे, हर एक के लिए एक विशेष रकम निर्धारित कर दी और अपने घर वालों और रिश्तेदारों के लिए भी अच्छी भली दौलत छोड़ दी।

हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ि० के काल में हज़रत सईद बिन आमिर शाम के इलाका हम्मास के गवर्नर थे। दौलत और शोहरत से उनको कोई लगाव न था। हज़रत उमर रज़ि० के आग्रह पर उन्होंने गवर्नरी स्वीकार कर ली। कुछ ही समय के बाद हम्मास से एक प्रतिनिधि मंडल हज़रत उमर रज़ि० के पास पहुंचा। आपने फ़रमाया कि ग़रीबों व ज़रूरतमन्दों के नाम लिख कर दे दो ताकि मैं उनकी मदद करूं। मंडल ने एक सूची पेश की। उसमें सईद बिन आमिर का नाम भी था। हजरत उमर रज़ि० ने पूछा। सईद कौन है? जवाब दिया : हमारे गवर्नर। पूछा क्या तुम्हारे गवर्नर ग़रीब व मोहताज हैं ? उन लोगों ने कहा : जी हां, कई कई दिन गुज़र जाते हैं, उनके यहां चूलहा तक नहीं जलता।

हज़रत उमर रज़ि० यह सुनकर रो पड़े। आंसूओं से उनकी दाढ़ी तर हो गयी। फिर एक थैली में से एक हज़ार दीनार उनके सुपुर्द किए और कहा कि सईद बिन आमिर को मेरा सलाम पहुंचाना और कहना कि अमीरूल मोमिनीन ने तुम्हें यह भेजा है कि तुम अपनी ज़रूरत पूरी कर सको।

मंडल ने हम्मास पहुंच कर अपने गवर्नर को थैली दी। आपने खोल कर देखा तो दीनार थे। थैली को दूर हटाने लगे और इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन पढ़ने लगे, मानो कि कोई दुखद घटना घटी हो या कोई मुसीबत टूट पड़ी हो। घर में पत्नी ने आवाज़ सुनी तो घबराती हुई बाहर निकलीं और पूछा कि सईद क्या हुआ? क्या अमीरूल मोमिनीन का देहान्त हो गया? कहा कि नहीं। इससे बड़ी बात हो गई है। पूछा कि क्या मुसलमानों को किसी जंग में हार का सामना करना पड़ा? कहा नहीं, इससे भी दुर्भाग्यपूर्ण घटना हुई है। पूछा कि इससे भी बड़ी घटना क्या है? कहा कि दुन्या मेरी आख़िरत बर्बाद करने को आ पहुंची है और यह फ़ित्ना मेरे घर में दाख़िल हो गया है। पत्नी ने दीनार के बारे में कुछ जाने बिना कहा कि इनसे जल्द छुटकारा हासिल कर लो। कहा कि क्या तुम मेरी मदद करोगी ? उन्होंने कहाः हां क्यों नहीं । अतः दोनों ने मिल कर उसी समय उसी स्थान पर वे सारे दीनार ज़रूरतमन्द और ग़रीब लोगों में बांट दिए।

और जो अल्लाह से डरता है अल्लाह उस के लिए रास्ते निकालता है और उसको ऐसी जगह से रोज़ी देता है जिस का उस को ख़याल ही नहीं आता और जो अल्लाह पर भरोसा करता है अल्लाह उसको काफी होता है।

(पवित्र कुर्आन)

0522-264646

**Bombay Jewellers**

*The Complete Gold & Silver Shop*

84, Victoria Street,
Akbari Gate, Lucknow.

# मां का दूध किसी दूसरे दूध का बदल नहीं

सादिका तस्नीम फारूकी

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने दूध पिलाने वाली औरतों को बड़ा सवाब बताया है, उनको दुन्या ही में नहीं, बल्कि आख़िरत में भी बदले की शुभ सूचना दी है, वैज्ञानिकों के रिसर्च से पता चला है कि मां का दूध किसी दूसरे दूध का बदल नहीं बन सकता, अगर मां चाहती है कि उसका बच्चा हर प्रकार की बीमारी से सुरक्षित रहे, अगर वह चाहती है कि उसका बच्चा पेट में दर्द, पेचिस, हाज़मा खराब न हो आदि बीमारियों से बचाना चाहती हो तो उसे अपना दूध पिलाना चाहिए, बच्चा पैदा होने के बाद मां का शरीर अपनी हालत पर उसी सूरत में तेजी से वापस आ जाता है, जबकि मां बच्चे को दूध पिलाए, पैदाइश के समय से ही बच्चे को मां का दूध पिलाने से ताक़त जल्दी आ जाती है, शीशी के दूध पीने वाले बच्चे अधिकतर पेट के दर्द में ग्रस्त रहते हैं।

पैदाइश के बाद शुरू के कुछ दिन तो मां के दूध में " कोलोस्ट्रम" मिला रहता है। जो बच्चे को मज़बूत बनाता है कोलोस्ट्रम में विटामिन 'ए' पाया जाता है, जोकि बच्चे के शरीर के लिए बहुत लाभदायक होता है, बाद में इतना विटामिन बाक़ी नहीं रहता धीरे–धीरे कम होता जाता है इसलिए शुरू ज़माने में मां को अपना दूध ज़रूर पिलाना चाहिए, बच्चा को मां के पेट में विटामिन नहीं मिल पाती, इसलिए पैदाइश के शुरू ज़माने में यह ज़रूर मिलना चाहिए।

कोलोस्ट्रम छोटे बचों को बाहरी कीटाणुओं के आक्रमण से भी बचाता है, पैदा होने वाले बच्चों को गले की बीमारी, निमोनिया का अधिक डर रहता है, अगर उन्हें कोलोस्ट्रम मिलता रहे तो वह इस बीमारी पर काबू पाते रहते हैं, जो बच्चे मर जाते हैं वह कोलोस्ट्रम की कमी के कारण मर जाते हैं अतः बच्चों को हर प्रकार से बचाने का उपचार मां का दूध है क्योंकि मां का दूध बच्चे के लिए दवा का काम भी करता है।

अतः पश्चिमी देशों में तो बहुत ही कम बच्चे को दूध पिलाने वाली मांए रह गयीं हैं, वास्तविकता यह है कि अल्लाह हर जानदार में दूध केवल उसकी संतान के लिए ही पैदा करता है दिमाग़ी बीमारी के डाक्टरों का कहना है कि आज का इन अधिकतर मां के प्यार से वंचित होता जा रहा है इस कारण दिमागी बीमारी बढ़ती जा रही है, पश्चिमी देशों में पति पत्नी का जीवन घरेलू नहीं बाज़ारी होता जा रहा है।

हर समय बच्चे का पेट भरा रहना भी हानिकारक है इससे पाचन शक्ति कमज़ोर हो जाती है, अगर खाना पच न सके तो आंतें कमजोर हो जाती हैं, बच्चा भी कमज़ोर हो जाता है और उल्टी, दस्त आना शुरू हो जाता है। दूध पिलाने के ज़माने में जिस प्रकार ठण्डी चीज़ें मां के खा लेने से बच्चे पर प्रभाव डालती है, उसी प्रकार गर्म आहारों का प्रभाव भी बच्चे पर पड़ता है, इन दिनों में बच्चा अगर बीमार है तो मां को भी बचना चाहिए।

मां का दूध बच्चे के लिए बहुत ही लाभदायक है बच्चे को दूध पिलाना मां पर बच्चे का अधिकार है आज–कल की माएं बच्चे को दूध पिलाना बुरा समझती हैं, बच्चे के लिए कोई भी दूध मां के दूध का बदल हो ही नहीं सकता इसके लिए सबसे अच्छा मां का ही दूध होता है, बच्चा केवल बाप ही की संतान नहीं बल्कि मां के भी दिल का टुकड़ा होता है परन्तु पश्चिमी शिक्षा से प्रभावित औरतें, बच्चे को अपना दूध इस कारण नहीं पिलाती कि दूध पिलाने से सुन्दरता और सेहत एवं जवानी पर प्रभाव पड़ेगा और उनकी जवानी ढल जायेगी।

ऐसी औरतों को रसूल सल्ल० का वह आदेश सामने रखना चाहिए, जब रसूल सल्ल० के मेअराज में (हज़रत मुहम्मद सल्ल० आसमान पर) गये तो रसूल सल्ल० ने फरमाया, "फिर मुझे और आगे ले जाया गया तो मैंने देखा कि कुछ औरतें हैं जिनकी छातियों को सांप नोच रहे हैं, मैंने पूछा यह कौन औरतें हैं ? कहा गया यह वह औरतें हैं जो अपने बच्चों को अपना दूध नहीं पिलाती थीं।"

और अगर बच्चा मां का दूध पीता है तो बच्चे को मां से बहुत अधिक मुहब्बत, लगाव और दिली

सम्बन्ध होता है, इसमें बड़ा हिस्सा दूध का होता है, जो माएं बच्चों को अपना दूध नहीं पिलातीं वह बच्चे के सीने में अपने लिए वह जोश कभी नही पा सकतीं, जो दूध पिलाने ही से पैदा होता हैं, अगर ऐसी माओं को अपने बच्चे से मुहब्बत न होना या अनजानापन, और सम्बन्ध न रखने की शिकायत है तो वह खुद उसकी ज़िम्मेदारी है, क्योंकि शुरू के दो सालों में उसने अपने गर्म सीने से बच्चा को दूर रखा और बच्चे के सीने में उसने अपनी सच्ची मुहब्बत व दिली मुहब्बत की गर्मी के एक दूसरे में नहीं किया तो उसका परिणाम यही निकलेगा।

मां का दूध बच्चे ही का खाना है, और अल्लाह तआ़ला इस दूध को केवल बच्चे की खूराक की सूरत में बच्चे ही के लिए मां की छातियों में पैदा किया है, और अल्लाह ने उसमें बच्चा के लिए भरपूर शक्ति रखी है, अल्लाह ने इस दूध को केवल शरीर बनाने के लिए नहीं बल्कि दिली मुहब्बत और सद्व्यवहार की खूराक भी बनाया है, मां का दूध बच्चे के लिए दिल व रूह, जोश व मुहब्बत है, और अच्छे व्यवहार पर भी प्रभाव डालता है।

मां बच्चे को अपना दूध पिला कर केवल तन्दुरुस्त ही नहीं बल्कि दूध के हर–हर बूंद के साथ अपने सद्व्यवहार, अच्छी कामनाएं, संयम आदि के प्रभाव को भी बच्चा के शरीर व जान में प्रभावित करती जाती हैं और यह अल्लाह ही की ओर से है कि दूध के साथ–साथ घुल मिल जाती है, एक दूसरे से मुहब्बत पैदा करने के लिए मां का दूध बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि दूध इन्सान का पहला खाना है, इस लिए इसका मामला और अधिक महत्वपूर्ण है।

हां अगर किसी मजबूरी की वजह से मां का दूध न मिले और किसी दूसरी औरत का दूध पिलाना पड़े तो उसमें भी बहुत सोच समझ कर काम लेना चाहिए, तन्दुरुस्त, जवान, दीनदार, संयम वाली हो और बेदीन बुरे व्यवहार, कंजूस, बेवकूफ और लालची औ़रत से न पिलाया जाए, हुजूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम अपनी संतान को अत्यन्त मूर्ख फाहिशा औरतों के सुपुर्द न किया करो, और न उसका दूध पिलवाया करो इसलिए कि दूध शरीर में गुण पैदा करता है और बच्चे पर उसका प्रभाव अधिक होता है।"

बच्चा को दूध पिलाने और खाना खिलाने का समय निश्चित कर लेना ज़रूरी है इससे बच्चे तन्दुरुस्त रहते हैं। अधिकतर यह देखा गया है कि बच्चों के हाथ में बोतल थमा देते हैं, और बच्चे यह बोतल लेकर बाहर भी पीते हैं, इससे पता चलता है कि मां फूहड़ है उसे कोई ढंग नहीं और लापरवाह है, जबकि यह इस्लामी शिक्षा के विरुद्ध हैं।

## कुछ मश्वरे

हर बार दूध पिलाने से पहले एक उंगली शहद बच्चा को चटा दिया करें तो बहुत लाभदायक है।

इसी प्रकार अफ़ीम खाना और खिलाना दोनों हराम है, अफीम खिलाने से बच्चा काला और बुरे स्वभाव का हो जाता है, अफीम ज़हर है, इससे हमेशा बचना चाहिए।

जब बच्चे की पैदाइश हो उस ज़माने में मां बच्चे को लेटे–लेटे दूध न पिलाए इससे कभी–कभी बच्चे का कान बहने लगता है, बच्चे को दूध पिलाने के जमाने में मांए अपने कपड़ों एवं शरीर को साफ सुथरा रखें, इसलिए ज़रा सी बदबू हो जाए तो बच्चे उल्टी कर देते हैं, बच्चे को जल्दी–जल्दी दूध पिलाने की कोशिश न कीजिए, बल्कि धीरे–धीरे खेल–खेल कर दूध पीने दिया जाए।

बिगड़ी बात बने नहीं लाख करो किन कोए।
रहिमन बिगड़े दूध को मथे न माखन होए।।

(Shop) : 266408
(Resi.) : 260884

**Iqbal & Co.**

Dealer:
***FRIEND EMBROIDERY MACHINE***

Dealer in:
**Embroidery Raw Materials Machine & Spare parts etc.**

**Pul Firangi Mahal, Behind Pata Nala Police Chowki, Chowk, Lucknow- 2260063**

समाज सुधार

# मेरे जीवन के अनुभव का निचोड़

मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी

व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों प्रकार के जीवन में इतनी उम्र (पचहत्तर साल, लिखने के समय) गुजार कर जो खास अनुभव प्राप्त हुए, उन्हें नम्बरवार नीचे दर्ज किये देता हूं कि शायद इन से किसी दूसरे को नफा हासिल हो जाए।

१. शारीरिक स्वास्थ्य का ध्यान शुरू ही से ज़रूरी है, बिना इस पर ध्यान दिये अनजाने ऐसी ऐसी ग़लतियां हो जाती हैं और ऐसी ऐसी असावधानियों की आदत पड़ जाती है कि आगे चलकर भरपाई बहुत कठिन हो जाती है और संभलने और सुधरने की कोई सूरत ही बाक़ी नहीं रहती। आंख, दांत, कान, शरीर का हर हर अंग एक बड़ी नेअ़मत है, महान वरदान है और नेअ़मत का क़ाअ़िदा है कि बेपरवाही और नाक़द्री के बाद छिन ही जाती है।

२. यही हाल धार्मिक शिक्षा तथा नैतिक दीक्षा का है, अगर शुरू ही से इन की जड़ें मज़बूत न हों तो आगे हमेशा ख़तरे महसूस होते रहेंगे। और तनमयता और लगन उम्र की किसी मंज़िल पर भी पहुंचकर मुश्किल ही है।

३. दुनिया में अगर कोई बड़ा काम कर जाना है तो इसका तरीक़ा यह नहीं है कि अपने 'स्व' में अपने को बड़ा समझ कर उछालने लगे यह राह नाकामी की है, कामयाबी अगर चाहिए तो अपने को सबसे छोटा बनाकर रखिये, दबाइये नहीं, खुद दबिये, दुनिया खुद ही आप को अपनायेगी और आंखों पर बिठायेगी। स्वार्थ, अहंकार और आत्म प्रशंसा का रास्ता दीन तो दीन, दुनिया में भी नुकसान व घाटे ही का है।

४. दियानत (सत्यनिष्ठा) और सच्चाई को अपनी पहचान बनाये रखें। जो दूसरों को धोखा देता है, वही धोखा खाता भी है। और जो दूसरों को गिराने की चिन्ता में लगा रहता है वह आखिर खुद ही गिरता है, चाहे उसके फल लाने में देर कितनी ही लगे। "ख़ुदा की खुदाई में देर है अन्धेर नहीं" यह कथन बड़े अनुभव का है।

५. भावनाओं को काबू में रखने का अभ्यास शुरू ही से जरूरी है। यह समझना कि जवानी गुजर जाने पर जज़बात खुद ही काबू में आ जायेंगे एक बड़ी भूल है।

६. मां की महब्बत और मां की ख़िदमत का वलवलः एक बड़ी दौलत है। दुन्या की नेअ़मतें एक तरफ और यह एक नेअ़मत एक तरफ। इस की क़द्र एक खास उम्र आ जाने के बाद होती है।

७. आख़िरत (परलोक) का अक़ीदा बौद्धिक, तार्किक, शाब्दिक पहलुओं से हटकर व्यावहारिक रूप में भी बड़ा ही क़ीमती अक़ीदा है। अपने दिल में जब से यह अक़ीदा उतरा, पूरी ज़िन्दगी सार्थक बन गई। इससे पूर्व प्लेटो, अरस्तू, कान्ट और हेगल, मिल और स्पेन्सर को चाट जाने के बावजूद यही गान्धी जी के अर्थपूर्ण शब्दों में एक "बेपतवार की नाव" थी।

८. हर गुनाह, हर काम–लोलुपता का इरादा जब तक कमजोर व कम रहता है, बौद्धिक तर्क रोक थाम के लिए काफ़ी हो जाते हैं लेकिन वही काम–लोभ की भावना जब तूफ़ान की तेज़ी धारण कर लेती है तो बुद्धि व तर्क के पैर उखड़ जाते हैं और अत्यन्त बुरे मन की निकृष्टिता (बदनफ़सी) और गन्दगी के लिए इसी अक़्ल को कोई न कोई हीला बहाना मिल ही जाता है। इस आख़िरी मर हले पर कामवासना (नफ़्स) से बचाव और मुकाबले की शक्ति केवल खुदा के खौफ़ में है, इसके अलावा किसी चीज़ में नहीं।

(पाक्षिक तामीरे हयात, लखनऊ १० सितम्बर २००३ से साभार)

अनुवाद तथा प्रस्तुति : मो० हसन अंसारी

## नमाज़ से सम्बन्धित

नीयत के साथ दोनों हाथ कानों तक उठाकर अल्लाहु अकबर कह कर हनफ़ी लोग नाफ़ के नीचे तथा दूसरे लोग सीने पर हाथ बांधते हैं। दिल में नीयत न करें तो नमाज़ न होगी इसी प्रकार नीयत के पश्चात अल्लाहु अकबर ज़बान से न कहें तो नमाज़ न होगी।

# हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि०

मेरे मां–बाप आप पर कुर्बान। बीती रात में मैंने एक अ़जीब व ग़रीब सपना देखा है। मैंने देखा कि मैं किसी बाग़ में हूं। बाग़ बहुत बड़ा और दूर तक फैला हुआ है। उसके बीच में लोहे का एक स्तंभ है, जिसका नीचे का सिरा ज़मीन में है और ऊपर का आसमान तक पहुंचा हुआ है। ऊपर की ओर एक हलक़ा (कड़ा) सा है। मुझसे किसी ने कहा कि इस स्तंभ पर चढ़ जाओ। मैंने कहा, मैं नहीं चढ़ सकता। इतने में एक नौकर आ गया। उसने पीछे की ओर से मेरे कपड़े उठाये और मैंने उसके ऊपर चढ़ना शुरू कर दिया, यहां तक कि मैं स्तंभ के ऊपर पहुंच गया और उसका हलक़ा पकड़ लिया। किसी ने कहा, इसको मज़बूत पकड़ लो। इसके बाद मेरी आंख खुल गयी।

प्यारे नबी सल्ल० ने फ़रमाया, जो बाग़ तुमने देखा, वह इस्लाम का बाग़ है और स्तंभ इस्लाम के हुक्म और हिस्से हैं और हलका या कड़ा इस्लाम का बंधन है।

प्यारे नबी (सल्ल०) से अपने सपने का अर्थ सुनकर वह बहुत खुश हुए और अल्लाह का गुणगान करने लगे।

यह साहब जिन्हें अल्लाह के रसूल ने मरते दम तक इस्लाम पर क़ायम रहने की खुशखबरी दी थी, वह हज़रत अबू यूसुफ अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि०) थे।

उनकी गिनती अहले किताब सहाबा में होती है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि०) का नाम हसीन था। यह तौरात के बहुत बड़े आलिम थे। यह इंजील का भी बहुत अच्छा ज्ञान रखते थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम ने रसूल सल्ल० की निशानियां जाननी चाहीं तो जो बातें मालूम हुईं, वे तमाम की तमाम तौरात में दर्ज निशानियों के अनुसार थीं। उनके दिल में उसी वक़्त इस्लाम का बीज पड़ गया था। वह उसी वक्त से प्यारे नबी (सल्ल०) से मुलाक़ात के लिए बेचैन रहने लगे।

प्यारे नबी (सल्ल०) जब हिजरत करके मदीना तशरीफ ले आये तो उस वक्त हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि०) अपने बाग़ में थे और बच्चों के लिए फल उतरवा रहे थे। उनकी फूफी ख़ालिदा बिन्त हारिस भी उनके पास बाग़ में बैठी हुईं थीं। इतने में किसी ने आकर प्यारे नबी सल्ल० के आने का ज़िक्र किया। हज़रत अब्दुल्लाह के लिए यह ख़बर अच्छी ख़बर थी। वह बहुत खुश हुए।

उनकी फूफी कहने लगीं–

'हसीन ! इन साहब के आने से तुम्हें इतनी खुशी हुई है कि शायद मूसा बिन इमरान भी तशरीफ़ लाते तो तुम इतने खुश न होते।'

उन्होंने कहा –

'फूफीजान ! खुदा की क़सम ! यह भी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के भाई हैं और उसी मक्सद के लिए दुनिया में तशरीफ लाये हैं, जिसके लिए हज़रत मूसा (अलै०) तशरीफ़ लाये थे।'

फूफी ने कहा –

"भतीजे ! क्या यह वाकई वह नबी हैं, जिनकी तौरात और दूसरी आसमानी किबातों में खबर दी गयी है।'

बिन्ते हारिस भी उनके साथ साथ गयीं और दोनों ने बाक़ायदा इस्लाम कुबूल कर लिया।

वहां पहुंचने पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम ने तीन सुवाल किये थे। ये सुवाल ऐसे थे जिनके जवाब नबी (सल्ल०) के अलावा कोई दे ही नही सकता था।

उन्होंने पहला सुवाल किया था–

'क़ियामत की निशानियों में से पहली निशानी कौन–सी है ?'

आपने जवाब दिया था–

वह एक आग होगी जो लोगों को पूरब से पश्चिम की ओर हंका कर ले जाएगी।

दूसरा सुवाल था–

"जन्नत वालों को पहली चीज़ खाने को क्या मिलेगी ?

आपने जवाब दिया –

'मछली का जिगर होगा।'

तीसरा सुवाल था –

"वह कौन सी वजह है, जिससे बच्चा कभी तो मां की शक्ल पर होता और कभी बाप की शक्ल पर? प्यारे नबी सल्ल० ने फ़रमाया –

'मां का प्रजनन तत्व अगर छा जाये तो बच्चा मां की शक्ल पर और बाप का प्रजनन तत्व छा जाये तो बच्चा बाप की शक्ल पर पैदा होता है।'

इन सुवालों का जवाब पाने के बाद हसीन बिन सलाम ने इस्लाम कुबूल कर लिया। प्यारे नबी (सल्ल०) ने उनका नाम बदल कर अब्दुल्लाह बिन सलाम रख दिया।

यह थे हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि०)

# हज़रत इमाम सुफ़यान सौरी (रह0)

माइल ख़ैराबादी

क़अकाअ़ बिन हकीम कहते हैं कि एक दिन मैं ख़लीफा मेहदी के पास बैठा हुआ था। इतने में ख़लीफ़ा के बुलावे पर हज़रत सुफयान सौरी (रह०) तशरीफ लाये और जिस तरह आम मुसलमानों को सलाम किया जाता है उसी तरह मेहदी को सलाम किया– "अस्सलामु अलैकुम" कहा और बैठ गये। सलाम करते वक़्त न झुके, न हाथ उठाया और न बैठने की इजाज़त ली। यह बात मेहदी के दरबारी कायदे के खिलाफ़ थी। मेहदी मुस्कुराया, फिर बोला, ऐ सुफ़यान । आप हमारे डर से इधर उधर भागते फिरते हैं और यह समझते हैं कि हम आपके साथ बुरा सुलूक करना चाहें तो नहीं कर सकते। अब बताइए इस वक़्त आप हमारे बस में हैं, अगर हम चाहें और हुक्म दें तो आपको अभी ज़लील और रुस्वा किया जा सकता है।

खलीफा मेहदी के यह कहने पर हज़रत सुफ़यान सौरी (रह०) ने जवाब दिया, "अगर तुम मेरे साथ इस तरह का बरताव करोगे तो बादशाहों का बादशाह (अल्लाह) जिसके बस में सब कुछ है और जो हक़ व बातिल को छांट कर अलग अलग कर देता है, वह भी तुम्हारे साथ ऐसा ही फैसला करेगा।"

उस वक़्त मेहदी का लड़का रबीअ़, मेहदी के पीछे, तलवार की टेक लगाये खड़ा था। वह हज़रत सुफ़यान का जवाब सुनकर गुस्से से बेताब हो गया और खलीफ़ा से कहने लगा, "अमीरुल मोमिनीन, यह जाहिल आदमी आपके साथ गुस्ताख़ी कर रहा है। इजाज़त दीजिए कि इसकी गर्दन उड़ा दूं।"

मेहदी ने उससे कहा, "तमु बदनसीब हो, तुम्हें मालूम नहीं ये लोग क्या–क्या खूबियां रखते हैं। अगर तुम इनको क़त्ल कर दोगे तो हम सब तबाह हो जाएंगे। मैंने इनकी सच्चाई पर इनको कूफे का काज़ी (जज) बनाता हूं और ऐसा काज़ी कि इनके फैसले की अपील भी न हो सके।" फिर मेहदी ने इस मजमून का हुक्मनामा लिखकर उन्हें दिया और कूफ़ा जाने को कहा।

हज़रत अबू सुफ़यान सौरी रास्ते से भाग निकले। हुक्मनामा दजला में बहा दिया और फिर उम्र भर हुकूमत के सिपाहियों से छिपते फिरे। ख़लीफ़ा ने बहुत तलाश किया मगर उन्हें न पा सका, यहां तक कि उनका इंतिक़ाल हो गया।

**नमाज़ नहीं होती**

नमाज़ में कुर्आन की क़िराअत (पाठ) मन में करने से नमाज़ नहीं होती। ज़बान से पढ़ना ज़रूरी है।


0522-508982

अनस मैरेज हाल

बारात, वलीमा व किसी भी खुशी के मौके के लिए कम खर्च में हमसे सम्पर्क करें ।

कपूर मार्केट (मलिक मार्किट)
विक्टोरिया स्ट्रीट, लखनऊ

MOHD. ASLAM

(S) 268845, 213736
(R) 268177, 254796

Haji Safiullah & Sons

Jwellers

Nagina Market Akbari Gate, Lucknow
Opp. Gadbad Jhala, Aminabad Road, Lucknow.

# क्या आप अच्छे बाप हैं

इन चन्द परामर्शों पर अमल करके आप अपने घर के माहौल में रोचक परिवर्तन ला सकते हैं

मेरी आयु उस समय आठ वर्ष होगी जब मुझे अपने आसपास का स्पष्ट ज्ञान होने लगा। मेरे मां बाप दोनों काम करते तो घर चलता था लेकिन हमारे घर की एक परम्परा थी कि हम रात का खाना साथ खाते, खाने के बीच वर्तमान परिस्थितियों और राजनीति पर बातें होतीं। हम अपनी जानकारी एक दूसरे से आदान प्रदान करते। सब क़हक़हे लगाते खुश होते लेकिन मेरा बाप हल्की सी मुस्कुराहट अपने चेहरे पर सजा कर जो बात करते वह महत्वपूर्ण होने के साथ–साथ अर्थपूर्ण भी होती।

एक शाम हम उच्चतम न्यायालय के एक फैसले के विरुद्ध अमरीका के राष्ट्रपति रुज़वेल्ट के "साहस" के बारे में बातचीत कर रहे थे। समाचार पत्रों में इसका बहुत चर्चा था। राजनीतिक क्षेत्रों में विवादित चर्चा हो रही थी। उच्चतम न्यायालय के नौ न्यायधीशों ने "निवडील" नामी एजेंसी को ग़ैर क़ानूनी क़रार दिया था जिस को रुजवेल्ट ने निर्माण किया था। इस फैसले को निरस्त करने के लिए रूज़वेल्ट उच्च न्यायालय में अपनी पसन्द के न्यायधीश लाकर फैसला कराना चाहते थे। मेरे माता पिता रूज़वेल्ट के इरादों की सफलता चाहते थे। जबकि मैं कहता था कि वह सफल हो जाएंगे तो उच्चतम न्यायालय पर हावी हो जाएंगे। मेरे बाप ने मेरा हर शब्द ध्यान पूर्वक सुना और गम्भीरता से अपने सिर को हिलाते रहे। कुछ सप्ताह के बाद रुज़वेल्ट के इरादे असफल हो गए। उस रात मेरे पिता ने रात के खाने पर सेब के रस की बोतल खोली और मेरी तरफ बढ़ाते हुए कहा "जायूसी ! यह तुम्हारे लिए है, तुम ठीक कहते थे।" बाप के इस समर्थन से जैसे मुझे लाखों डालर मिल गए हों। मैंने अपने पिता का यह प्रशंसा का वाक्य वर्षों तक याद रखा और उनके हिम्मत बंधाने के जज़्बे को आज भी सलाम करता हूं। मेरे पिता ने मुझे आत्मविश्वास का ज्ञान प्रदान किया जो हमेशा से मेरे साथ है।

पारम्परिक तौर पर एक पिता की कल्पना यह है कि वह अपने कुटुम्ब के लिए कमाए और फिर घरेलू व्यवस्था की तरफ़ ध्यान दे लेकिन ऐसे में भी वह एक विशेष भूमिका अदा कर सकता है। आज के युग में बहुत से बाप ऐसे हैं जो बच्चों के पालन पोषण में अपनी पत्नी का हाथ बटाते हैं। ऐसे बाप बच्चों के पालन पोषण के कार्य को अपना भविष्य बनाने के अन्दाज़, से सम्पन्न करते हैं। ऐसे ही एक बाप ने बताया "मेरे पिता गर्व से बताया करते थे कि उसने अपने जीवन में कभी अपने बच्चे की जांघिया तक नहीं बदला लेकिन मुझे अभिमान है कि मैं ने हजारों बार अपने बच्चों के न केवल जांघिये बदले बल्कि उनको नहला धुला कर उनका पूरा वस्त्र बदला।"

एक बाप बच्चे की दूसरी मां नहीं बन सकता तब भी अच्छे बाप अपने बच्चों से एक रचनात्मक मेल जोल का रिश्ता मज़बूत कर सकते हैं। मनोवैज्ञानिक रिसर्च ने साबित किया है कि मांओं की तुलना में बाप बच्चों के शारीरिक उत्थान रचनात्मक ज्ञान की पुख्तगी, नई निपुणता सिखाने और उन की बात चीत में यक़ीन और विश्वास पैदा करने में अधिक सहायक हो सकता है।

प्रभावी बापों की मदद से लाभ उठाने वाले बच्चे अपने साथियों से बेहतर नज़र आते हैं और अधिक सामाजिक ज्ञान का प्रदर्शन करते हैं। किसी नए माहौल में अपना स्थान पैदा करने में उन्हें देर न लगती। वह परिवर्तन स्वीकार करते हैं और सामाजिक अनुकूलता से काम लेते हैं।

## यदि आप एक बाप हैं तो खुद से निम्न प्रश्न कीजिए क्या मेरे अन्दर अच्छा बाप मौजूद है?

दुर्भाग्य यह है कि मां बाप कभी कभी अलग हो जाते हैं लेकिन एक अलग हुए बाप को ऐसे रास्ते खोजने चाहिए कि वह बच्चों की जिन्दगी में दाखिल रहे चाहे वह अलग हो जाने वाली मां से बच्चे के बारे में बातचीत कर सकता हो या नहीं। एक मिसाल देखिए –

अलग होने वाली मां ने अपनी बेटी को बाप के विरुद्ध इतना उकसाया कि बेटी ने बाप से उम्र भर न मिलने की कसम खाली। बाप किसी न किसी बहाने बेटी से फोन पर सम्पर्क करता। उस की कड़वी बातें सुनता और बुरा न मानता। उसे पत्र लिखता और कभी कभी उपहार भी भेजता रहता। समय बीतने के साथ साथ बेटी ने महसूस किया कि उस का बाप कितनी दृढ़ता से उसकी ज़िन्दगी में उसके साथ साथ रहा। चुनानचः उसने मां को बताए बिना बाप से मिलना शुरू कर दिया।

यह केवल अलग हुए बाप के अच्छे

बाप होने की मिसाल नही है। ऐसे बाप भी हैं जो फौजी सेवा में हैं और बहुत दिनों तक घर से बाहर रहते हैं या कुछ ऐसे भी हैं जो रोज़गार के सिलसिले में दूसरे देशों में हैं वह अपने बच्चों से अपने सम्बन्धन मज़बूत बना सकते हैं जब वह छुट्टियों के दरमियान घर में हो। अध्ययन से पता चला कि बाप की अनुपस्थिति बच्चे की प्रतिभा के स्तर को गिरा देती है, स्कूलों में बच्चे अच्छी गुणवत्ता का प्रदर्शन नहीं करते बल्कि पथभ्रष्ट होकर अपनी समस्याओं को अक्रामक ढंग से हल करने की कोशिश करते हैं। घर से दूर रहने वाले बाप को विभिन्न समस्याओं और घर के हाल चाल जानने के लिए फोन पर सम्पर्क बनाए रखना चाहिए। अपनी सूझ बूझ से उसे अपने ज़िन्दा और कुटुम्ब में मौजूद होने का एहसास दिलाते रहना चाहिए।

## क्या मैं अपने कुटुम्ब से सम्बद्ध हूं

तीन से पांच साल के बच्चों पर आधारित एक अध्ययन से पता चला कि अस्सी प्रतिशत बच्चे अपने बाप से अधिक टेलीवीज़न को तरजीह देते हैं। इस से ज़ाहिर होता है कि बाप किस हद तक अपने कुटुम्ब से जुड़ा हुआ है। कुटुम्ब से अपना सम्बन्ध ज़ाहिर करने के लिए प्रत्यक्ष रूप से उसे दिल से अपने कुटुम्ब से लगाव ज़ाहिर करना जरूरी है। बच्चे से मां बाप का लगाव बच्चे के पालन पोषण का बुन्यादी अंश है। एक अध्ययन के नतीजे में यह बात सामने आई कि ऐसे बेच्चे जिन के पालन पोषण में बाप की भागीदारी चालीस प्रतिशत थी वे चिन्तन तथा विवेचना में अधिक योग्यता रखते हैं। दूसरों के बारे में स्वस्थ भावना प्रकट करते हैं और अपने फ़ैसले पर कार्यरत रहते हैं।

## क्या बच्चों की सफलताओं पर खुशी जाहिर करता हूं।

यह स्वाभाविक है कि बाप, बेटे बेटी की सफलता पर प्रसन्नता का इजहार करें। बहुत कम बाप जानते हैं कि बेटे, बेटी की सफलता पर बाप की प्रसन्नता प्रकट करने पर वह किस कदर आत्मविश्वास और हौसला प्राप्त करते हैं।

## क्या बच्चे मेरा ध्यान चाहते हैं–

बच्चे अनिवार्य रूप से बाप का ध्यान चाहते हैं बाप का बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करना एक ऐसा पक्ष है जिस का प्रदर्शन व्यवहारिक रूप से होता रहता है और बच्चे स्वाभाविक तौर पर अपनी आवश्यकता पूर्ति के लिए बाप की तरफ़ देखते हैं। अच्छा बाप चाहे बच्चों के साथ रह रहा हो या किसी मजबूरी के कारण उनसे दूर हो उसे बच्चों का हौसला बढ़ाते रहना चाहिए और उनकी योग्यता की प्रशंसा करने के लिए उनके स्कूलों के कार्य कर्मों और उत्सवों में भाग लेते रहना चाहिए।

## समझौते से काम लेता हूं ?

ऐसे बाप जो अपने बच्चों की राय से भिन्न राय रखते हैं सहनशीलता से काम लेते हैं और नर्मी का व्यवहार अपनाते हैं, आम तौर पर कामयाब बाप होते हैं। आवश्यक नहीं कि उनकी सफलता उन की ज़ाती विजय की सूरत में ज़ाहिर हो। अपने प्यारों से मजबूत सम्बन्ध रखना भी सफलता है।

## क्या मैं अपनी समस्याएं घर लाता हूं?

एक पुस्तक का शीर्षक है "अपने बच्चों से परेशान दुन्या की बातें करना" जिस की लेखिका लेडोमाज़ हैं। वह लिखती हैं कि बहुधा माता पिता अपने बच्चों को वास्तविकताओं से सूचित नहीं रखते यहां तक कि वह नौकरी के छूट जाने या आमदनी का साधन रूक जाने का भी ज़िक्र तक नही करते। बच्चे मां बाप की कठिनाइयों को समझने की सूझ बूझ रखते हैं बल्कि वह चेहरे और आंखें भी पढ़ लेते हैं। ऐसे में उनके अन्दर आशंकाएं तथा भय उत्पन्न हो जाता है। उनको असुरक्षा की भावना आ घेरती है। अतः चिन्ता जनक समस्याओं के बारे में बच्चों से बराबर के स्तर पर बात करना एक उचित क़दम है।

डोमाज़ कहती हैं कि बच्चों को बताइये कि वास्तविकता क्या है और यह कि हमारे बीच प्यार के रिश्ते इस क़दर गहरे हैं और हम इतना मज़बूत हैं कि हम हर समस्या को हल कर लेंगे, हर कठिनाई पर काबू पा लेंगे। ऐसी दशा में छोटे बच्चे कम खर्च करने की शिक्षा ग्रहण करते हैं और बचत के विचारों से लाभान्वित होते हैं। बच्चे की सूझ बूझ उससे मांग करती है कि कठिनाई की अवध में खुद को उपकारी सिद्ध करें।

इन आदर्श प्रश्नों पर आधारित परीक्षा के बाद एक अच्छा बाप अपने आप से प्रश्न करे कि अगर उस के बच्चे उसके पगचिन्हों पर चलेंगे तो क्या वह प्रसन्न नहीं होगा ? "हां" में उत्तर होने के बावजूद यह नहीं कहा जा सकता है कि बाप एक आदर्श बाप है फिर वह एक ऐसा बाप है जिसने अपने कुटुम्ब को स्वस्थ और मज़बूत बनाने के लिए कुटुम्ब के सदस्यों में आदर्श गुणवक्ता पैदा करने की कोशिश की है। परन्तु आदर्श बाप वही कहलाएगा जिसे बच्चों की मां प्रथम श्रेणी में पास क़रार देगी।

अनुवाद : हबीबुल्लाह आज़मी

# उर्दू पुस्तक "हक़ीक़ते मौत" का परिचय

*इदारा*

मौत एक ऐसी हक़ीक़त (वास्तविकता) है जो हर इन्सान पर तारी होने वाली है। मौत से कोई बच नहीं सकता। हर जान को मौत का मज़ा चखना है। जहां भी तुम रहोगे मौत हर हाल में तुम को आ पकड़ेगी अगर मज़बूत क़िले में महफ़ूज़ (सुरक्षित) रहोगे तब भी। (हक़ीक़ते मौत)

मौत एक ऐसी वास्तविकता है जिस पर किसी को सन्देह हुआ ही नहीं। अगर हम कहें कि सुनो और यक़ीन करो कि सूरज रोज़ निकलता है और डूबता है तो शायद लोग मेरे दिमाग़ के बारे में शक करने लगें कि ऐसी खुली हुई वास्तविकता को यह शख़्स सुनाकर यक़ीन करने को कहता है। मौत तो उससे अधिक यक़ीनी है अतः मौत को सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है उसको याद दिलाने की आवश्यकता है। आज दुन्या का उत्पात मौत को भूल जाने ही के कारण है। कुछ भी हो मौत को इन्सान एक समय भूलेगा तो दूसरे समय मौत उसे याद आएगी और अन्ततः उससे भेंट करना ही है। इस संसार में उत्पात का बड़ा कारण मौत के पश्चात वाले जीवन से अज्ञानता और उस पर विश्वास न होना है। जिस नाम के मुसलमान ने इस्लामी शरीअ़त से आज़ाद होकर ज़िन्दगी गुज़ारने के बाद वसीयत की थी कि मेरे शव (लाश) को जला दिया जाए उसको मौत का यक़ीन था मगर मौत के बाद की ज़िन्दगी पर ईमान न था।

अल्लाह तआ़ला मौलाना अ़ब्दुल करीम पारीख साहिब को जज़ाए ख़ैर दे और उनकी उम्र लम्बी करे कि उन्होंने "हक़ीक़ते मौत" किताब लिख कर उम्मत पर बड़ा एहसान किया। किताब उर्दू में है। मौलाना ने इस किताब में कुर्आने मजीद की सौ से अधिक ऐसी आयतें दर्ज की हैं जिन में मौत का उल्लेख है जो मौत को भी याद दिलाती हैं और मौत के बाद की ज़िन्दगी को भी।

किताब के आरम्भ में जनाब मौलाना क़ारी मुहम्मद कासिम साहिब अंसारी का क़ीमती मुक़द्दमा है। दूसरा मुक़द्दमा जनाब प्रोफेसर वसी अहमद सिद्दीक़ी साहिब का है जो किताब का सारांश है। मुहतरम प्रोफेसर साहिब ने इस सत्य को स्पष्ट किया है कि "यह किताब खवास के लिए है गो गुफ्तगू अ़वाम से है।" मैं समझता हूं खवास से प्रोफ़ेसर साहब की मुराद वह जो इसको सहन कर सकें। और मेरी राय तो यह है कि यह किताब उन सब को पढ़वाई जाए जो जवानी में कदम रख चुके हैं। हमारे बुजुर्ग हज़रत मौलाना अ़ली मियां साहिब रह० हर निकाह के अवसर पर खुत्बे में यह नुक्ता बयान किया करते थे कि देखो कितने खुशी के अवसर पर कितनी कटु बात याद दिलाई जा रही है कि इस का प्रयत्न करना कि इस्लाम की हालत ही में तुम को मौत आए "वला तमूतुन्न इला व अन्तुम् मुस्लिमून" मौलाना अ़ब्दुल करीम पारीख साहिब ने अपने परि व मुर्शिद की लक़्लीद ही में उम्मत को मौत की याद दिलाने के लिए यह किताब लिखी है। वह खुद लिखते हैं –

"मौत नाम की इस किताब को बतौर तुहफ़ा कोई क़बूल करे या न करे बहर हाल उस को मौत की मंजिल से गुज़रना है और इस से किसी को फ़रार नहीं जब अम्रे वाक़िआ़ यह है तो अ़क़्लमन्दी की बात यही होगी कि इस पर ग़ौर व फ़िक्र करके मौत के बाद जिन हालात से इन्सान को गुज़रना है उनकी सहीह मालूमात ले ली जाएं। इसी ग़रज़ से हमने इस किताब में वह आयात जमा कर दीं हैं जिन में मौत और वफ़ात का ज़िक्र है।

किताब उर्दू में है आख़िरत की ज़िन्दगी बनाने के लिए जवानों तथा बूढ़ों को इस का पढ़ना पढ़वाना बड़े अच्छे परिणाम लाएगा।

१६ X २४ सेन्टी मीटर के ३०८ पृष्ठों पर फैली हुई स्पष्ट शब्दों की कम्पोज़िंग, अच्छे कागज़, सुन्दर छपाई जिल्द बनी हुई किताब का मूल्य केवल १२० रूपया है किताब ने प्रकाशक का पता यह है –

फरीद बुक डिपो प्राइवेट लिमिटेड

२१५८ एम०पी०स्ट्रीट पैटोडी हाउस

दरया गंज न्यू दिल्ली–२

# परामर्श प्रस्तुत है

सगीरा बानो शीरीं

## सर्दी में होठों का फटना

सर्दी की ऋतु आ रही है और मेरे होंठ अभी से फटने लगे हैं। बहुत कष्ट होता है। बाज़ार से स्टिक लेकर लगाती हूं परन्तु लाभ नहीं होता। इसके लिए कोई टोटका बताइये। (ज०अ० हैदराबाद)

सर्दी ऋतु कुछ लोगों पर अधिक प्रभाव डालती है। किसी के पांव की उंगलियां सूज जाती हैं। कुछ के चेहरे शुष्क हो जाते हैं और होंठ फट जाते हैं आपकी भी यही समस्या है।

आप खाने पीने में थोड़ी सावधानी रखिये। बड़ा गोश्त और अधिक मिर्चा न खाइये। हो सके तो विटामिन 'सी' की एक गोली प्रति दिन खा लीजिए। सब्ज़ी, सलाद रोजाना खाइये। एक टोटका बहुत अच्छा है नमाज़ पढ़ने के बाद रात को सोते समय रूई के फाए पर तेल लगाकर नाभी में रख लीजिए। इससे आपके होंठ नर्म और मुलाएम होंगे।

आप होंठों पर पिट्रोलियम जेली या ज़ैतून का तेल रात को लगाइये। इंशाअल्लाह आप की समस्या हल हो जाएगी।

मेरी माता मधुमय की रोगी है। उनका इलाज तो हो रहा है मगर मैंने किसी से सुना था कि दूध से भी इसका इलाज होता है। आपकी जानकारी में ऐसा कोई इलाज हो तो अवश्य बताइये। (अहसन अहमद बकसर)

मधुमय के रोगी को चाहिए कि अपने डाक्टर से परामर्श करके परहेज़ करे। अगर परहेज़ करे बड़ी हद तक रोग पर काबू पाया जा सकता है। आपने दूध के बारे में पूछा है । संयोग से जौहराबाद के होमियो पैथिक डाक्टर मलिक मुहम्मद मसऊद साहब ने मुझे अपने अनुभवों की रोशनी में लिखा है और प्रमाण स्वरूप किलीनिकल मैट्रिया मेडिका ई०ए० फ्रैंगटन का पृष्ठ २८ भी भेजा है जिसमें लिखा है: – शूगर के उपचार के लिए लेकडी फ़्लोरियम का बहुत प्रयोग किया गया। मरीज़ को हिदायत की जाती है कि दूध जिसमें मक्खन या मलाई उतार ली गई हो अर्थात (Skimmed milk) सुबह, दोपहर शाम आधा लीटर प्रयोग करें। इस बीच सभी मीठी चीज़ों का आहार बन्द कर दें। और दूध की मात्रा को क्रमशः बढ़ाते हुए चार पांच लीटर पीए। यह दूध सस्ते दामों में मिल जाता है। आप अपने डाक्टर से पूछ कर दूध का प्रयोग कर सकते हैं। मगर इस बात का ध्यान रहे कि मक्खन और मलाई वाला दूध इस्तेमाल न करें और वाली चीज़ें बिल्कुल बन्द कर दें।

## बच्चे को कैसे संतुष्ट करूं :

हम मध्यम वर्ग से सम्बन्ध रखते हैं। शादी के सात वर्ष बाद हमारे यहां बेटा पैदा हुआ। अब वह दूसरी कक्षा में पढ़ता है। उसके प्रश्नों से मैं तंग आ चुकी हूं। हमने अपने सामर्थ्य भर उसको अच्छे स्कूल में दाख़िल कराया है, परन्तु अपने साथियों का रहन सहन और उनके घर देख कर पूछता है। इन सबके पास गाड़ियां हैं मगर आप के पास ख़राब सी मोटर साइकिल है। आप गाड़ी क्यों नहीं लेतीं और मुझे पाकेटमनी बहुत कम देती हैं। आप का घर सर्वेंट क्वाटर जैसा है। आप इतनी सुन्दर नहीं जितनी मेरी दोस्त की मामा (मां)। इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देती हूं परन्तु वह संतुष्ट नहीं होता। मुझे क्या करना चाहिए? बच्चे बहुत बुद्धिमान होते हैं। उनको सही उत्तर न मिले तो संतुष्ट नहीं होते। आप अपने बच्चे को प्यार से समझाइये अल्लाह तआला ने हमें दूसरों से अच्छा जीवन व्यतीत करने के लिए पैसा दिया है और हम बजट बना कर उसी में समय गुज़ारते हैं। किसी से उधार नहीं लेते और थोड़ा पैसा तुम्हारी तालीम के लिए बचा रहे हैं। बच्चे को अपने से नीचे लोगों के सम्बन्ध में बताएं। उसको धार्मिक शिक्षा शुरू से दीजिए। उसको छोटा सा कोई बक्स दीजिए जिस में वह पैसा जमा करे। जब बक्स भर जाए तो आप बच्चे से कहिए किसी ग़रीब दोस्त को कोई चीज़ पैसों से खरीद कर तुहफा दें।

उसे बताइये सुन्दरता ही सब कुछ नहीं बल्कि आचरण मूल चीज़ है। इसे रात को सदाचार की कहानियां सुनाइये। यह बातें सारी उम्र उसके काम आएंगी। बच्चों को झूठ बोल कर उसे कहलाने की कोशिश न कीजिए। उसे मेहनत करने का उपदेश दीजिए। जब वह पढ़ लिखकर समाज का एक महत्वपूर्ण व्यक्ति हो जाएगा तो फिर उसके पास जिन्दगी की हर जरूरी चीज़ होगी। गाड़ी हर एक के पास नहीं हो ती आपके पास तो मोटर साइकिल है। उससे कहिए यह बहुत बड़ी नेअ़मत है।

# मानवता को इस्लाम का पैग़ाम

सै० सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

इस्लाम की यह तालीम रही है कि व्यक्तियों और क़ौमों पर उपकार और सफलता के द्वार खोले जाएंगे जिन्हें अल्लाह की वास्तविक्ताओं पर विश्वास हो और इस विश्वास के साथ उनके कर्म भी अच्छे हों। उपकार तथा नजात (मोक्ष) किसी नस्ल और क़ौमियत पर आधारित नहीं, न किसी धर्म व समुदाय से सम्बन्ध पर है बल्कि अल्लाह के आदेशों पर यक़ीन लाने और उनके अनुसार कर्म करने पर है। ईमान का अभाव और बुरे कर्मों का नतीजा दुन्या और आख़िरत (लोक परलोक) की तबाही और ईमान और सदकर्मों का नतीजा दीन व दुन्या की बेहतरी है। खुदा के सिवा न तो आसमान में न ज़मीन में न आसमानों के ऊपर और न ज़मीन के नीचे कोई ऐसी चीज़ है जो इंसान के सज्दे, रूकूअ, व क़्याम अर्थात उपासना के योग्य हो। हर उपासना केवल उसी के लिए है और हर पूजा केवल उसी के लिए है। इबादत के लिए ख़ुदा और बन्दे के बीच किसी विशेष ख़ान्दान और किसी विशेष व्यक्ति के माध्यम की आवश्यकता नहीं। अल्लाह तआ़ला के आगे अपनी बन्दगी और दास्ता का भेंट चढ़ाना ही इबादत है। इसी के साथ हर नेक काम जो ख़ास अल्लाह और उसके पैदा किये हुए जगत के लाभ के लिए हो और जिसे केवल अल्लाह की ख़ुशी प्राप्त करने के लिए किया जाए, वह भी उपासना है। वह तमाम अच्छे और नेक काम जो हर इंसान दूसरे के लाभ के लिए करे वह भी इबादत है। भाई चारे को स्थापित करने और एकता क़ाइम करना भी, उपासना है। संयम, निःस्वार्थता, तवक्कुल, (तुष्टि) सब्र और जो है कुछ उस पर अल्लाह का शुक्र अदा करना भी सब इबादत है।

संयम यह है कि अच्छे और बुरे के पहचान की चिन्ता हो, और निःस्वार्थता यह है कि हर काम में अल्लाह तआ़ला के राज़ी होने का विचार हो, तवक्कुल यह है कि किसी काम में चाहे जितनी रूकावटें पैदा हों अल्लाह से आस न तोड़नी चाहिए और अपने बुरा चाहने वालों का भी बुरा न चाहा जाए। सब्र यह है कि अगर सफलता हो तो उस पर घमण्ड करने के स्थान पर खुदा की दया कृपा समझी जाए जिस का इक़रार करना शुक्र है। अल्लाह के बन्दों में अल्लाह का सबसे प्यारा वह है जिस के आचरण सबसे अच्छे हों। सदाचरण की विशेषता उसके ज्ञान व दर्शनशास्त्र में नहीं बल्कि उसके कर्म में है। निःस्वार्थता का अर्थ यह है कि यह हर प्रकार की सांसारिक, स्वार्थपरता और निजी स्वार्थों से पाक हो। सहानुभूति और तीमारदारी मानवता का एक कर्तव्य है, लोगों से अच्छी बात कहना और अच्छाई से पेश आना भी मानवता का कर्तव्य है जिसमें किसी धर्म या सम्प्रदाय की कैद नहीं। दीन, धर्म और नस्ल तथा कौमियत की भिन्नता इस न्यायिक व्यवहार में रूकावट न हो। इंसान के हर कौल और अमल की दूरुस्ती की बुन्याद यह है कि इसके लिए उसका दिल और उसकी ज़बान आपस में एक दूसरे के अनुरूप और सहमत हों। इसी का नाम सत्यता और सच्चाई है। जो सच्चा नहीं उसका दिल हर बुराई का घर हो सकता है। दानशीलता बहुदा सदाचरण की बुन्याद है। इसी से सहजातीयों के साथ सहानुभूति और प्रेम पैदा होता है। सतीत्व (इफ़्फ़त) व पवित्रता सारे सदाचरण की ख़ूबियों की जान है जिस का लगाव इज़्ज़त और आबरू से हैं यह इंसान के चेहरे का नूर (प्रकाश) है। इंसानों में सब से अच्छा इंसान दया करने वाला है। सदाचरण की तराजू में न्याय व इंसाफ का पल्ला कुछ कम भारी नहीं। जिस प्रकार अल्लाह तआ़ला अपने प्रतिज्ञा का सच्चा और अपने प्रण का पक्का है, उसी प्रकार उसके बन्दों की ख़ूबियों में से एक बड़ी ख़ूबी यह है कि वह किसी से जो प्रतिज्ञा करें वह पूरा करें और जो क़ौले व क़रार करें, उसकी पाबन्दी करें। समुद्र अपनी दिशा बदल दे तो बदल दे और पहाड़ अपनी जगह से टल जाए तो टल जाए मगर जो प्रतिज्ञा की जाए उसको ज़रूर पूरा किया जाए।

किसी की भलाई करना एक ऐसी विशेषता है जो हर नेकी के काम का आधार है। क्षमा और माफ़ी अल्लाह तआ़ला की बहुत बड़ी ख़ूबी है। यदि यह न हो तो संसार एक मिनट के

लिए भी आबाद न रहे। निःस्वार्थता की बड़ी विशेषता यह है कि दूसरों की ज़रूरतों को अपनी ज़रूरतों के ऊपर प्राथमिकता दी जाए इसी का नाम स्वार्थ त्याग है, झूट को मिटाने और अत्याचार को रोकने में वीरता और बहादुरी दिखाई जाए। सत्य बात के सिलसिले में चाहे जितनी कठिनाई आए, विरोध हो, सताएजाएं, हर खतरे को सहा जाए। सच्चाई का बताना सब से अधिक प्रशंसा के योग्य है। अपभोग (खियानत) विश्वास घात सब से बुरे गुनाहों में से है। ग़द्दारी, दग़ाबाज़ी, प्रतिज्ञा भंग करना सबसे बुरी बुराइयां हैं। नाप तौल में कमी बेशी करना, देश में फ़साद फैलाने वाले, बेचने और खरीदने वाले, दूसरों के लिए निचोड़ने वाले सब पर धिक्कार तथा फटकार बताई है। अल्लाह तआला के यहां उनको क्षमा नहीं किया जाएगा जो दिल में कीना कपट रखते हैं। अल्लाह तआला ने अत्याचार को अपने बन्दों के लिए हराम किया है। घमण्ड धार्मिक आचरण और सामाजिक दुराचरण का स्रोत है। घमण्डियों का ठिकाना दोज़ख है। अगर कोई कार्य देखावे और नाम कमाने के लिए किए जाए तो यह ढोंग है, जिससे कर्म की सारी इमारत कमज़ोर हो जाती है। फ़ुजूल खर्ची से दुराचरण पैदा होता है और कामी दौलत भी बरबाद होती रहती है। तमाम क़ौमी दुराचरण में सबसे अधिक खतरनाक चीज़ डाह तथा ईर्ष्या है। और उससे हर हाल में बचना चाहिए।

अनुवाद – हबीबुल्लाह आज़मी

**इंसानों की खिदमत एक इबादत है।**

## मुनाजात

मौलाना मुहम्मद सानी हसनी

हम को यारब ज़बाने गुहर बार दे
हम को हुस्ने यकीं, हुस्ने किरदार दे
सिद्को इख्लास दे दर्दो ईसार दे
चश्मे बीना दे और क़ल्बे बेदार दे
कर हमें खूबरू खुश दिलो ख़ुश कलाम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम

हम को तू उन में कर तौबा करते हैं जो
और दिलो जान से तुझ पे मरते हैं जो
हम को तू उनमें कर तुझ से डरते हैं जो
तुझ को शामो सहर याद करते हैं जो
हम करें पैरवीये रसूले अनाम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम

ऐ खुदा हमको मर्दे हक़ आगाह कर
साहिबे अ़क़्लो फ़हमो खुद आगाह कर
राह दिखला के हम को न गुमराह कर
हम से यारब किसी को न बे राह कर
हम से ले ज़िन्दगी भर हिदायत का काम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम

आलो औलाद को घर की ज़ीनत बना
तू हमारे लिये उनको रहमत बना
ठन्डक आंखों की कर, दिल की राहत बना
उम्र भर बाअ़िसे ख़ैरो बरकत बना
तू बना हम को मर्दाने हक का इमाम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम

तू बचा उनको फ़ित्नों से आफ़ात से
हर बुरे काम से हर बुरी बात से
उनको महफ़ूज़ रख तू खुराफ़ात से
न हों दो चार वह सख़्त हालात से
हों न गुमराह वह और न हों बे लगाम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम

●●●

## धूम्रपान से बढ़ीं मौतें

विश्व भर में धूम्रपान से होनेवाली मौतों में निरन्तर बढ़ोत्तरी हो रही है। इससे वर्ष २००० में विकासशील देशों में २४ लाख १० हजार एवं विकसित देशों में २४ लाख ३० हजार व्यक्तियों सहित कुल ४८ लाख ३४ हजार व्यक्तियों की मृत्यु हुई। लेंसेट मेडिकल जर्नल में इस सप्ताह प्रकाशित अनुसंधान में ये आंकड़े दिये गये हैं।

विशेषज्ञों ने कहा कि इस अध्ययन का उपयोग विकासशील देशों की सरकारों को धूम्रपान निषेध नीति के निर्माण में करनाचाहिए। अमेरिकन कैंसर सोसाइटी में ऐपिड मोलॉजी के अध्यक्ष डॉ०माइकल थुन ने कहा कि इन देशों में इस आशय की नीतियों एवं विधायी गतिविधियों को लेकर कभी–कभार ही हरकत होती है, जब देश में वास्तव में महामारी का सामना करना पड़ता है। गत माह एक अध्ययन में पाया गया कि पश्चिमी देशों में धूम्रपान के कारण फेफड़ों के कैंसर के बजाए भारत में क्षयरोग के कारण ज्यादा मौतें होती हैं।

**हनफ़ी उलमा तम्बाकू के प्रयोग को मकरूह बताते हैं जब कि सअ़दिया के हंबली उलमा इसे हराम बताते हैं। तम्बाकू के जो नुकसानात हैं उनको ध्यान में रखते हुए तम्बाकू से बचना और दूसरों को बचाना अनिवार्य जानना चाहिए।**

# बच्चे की उपेक्षा नकारात्मक भाव जगाती है

एम०एस०एन०

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार भीड़ भाड़ में पलने वाले तथा एकांत में रहने वाले बच्चों के मन में बचपन से ही आक्रोश पैदा हो जाता है और वे चिड़चिड़े स्वभाव के हो जाते हैं। उनकी सोच पूर्ण रूप से नकारात्मक हो जाती है। इसलिए शुरू से ही बच्चों के मानसिक विकास पर पर्याप्त ध्यान देना बहुत आवश्यक है, ताकि वे कुंठाओं के शिकार होने ही न पाएं।

कई माता–पिता बच्चों की भावनाओं को समझने का कतई प्रयास नहीं करते। वे जाने–अनजाने में उनकी भावनाओं को चोट पहुंचा देते हैं। जिससे उनका बालपन बहुत बुरी तरह से आहत होता है।

बालपन की भावनाओं को समझना बेहद जरूरी है। यह जानने का प्रयास करें कि वे आपसे क्या अपेक्षा रखते हैं और फिर यथासंभव उनकी अपेक्षाओं पर खरा उतरने की भरसक कोशिश भी करें। उनके मन को आहत न होने दें।

आमतौर पर आज के बच्चों का आउटडोर गेम्स के प्रति लगाव बहुत कम हो गया है। बच्चे या तो इनडोर गेम्स खेलना पसन्द करते हैं या फिर कंप्यूटर गेम्स, मगर इन खेलों से न तो बच्चों का शारीरिक विकास ही हो पाता है और न ही उतना मानसिक विकास, जितना कि अपेक्षित होता है।

कई अभिभावकों की सोच होती है कि खेलने–कूदने से बच्चों का सिर्फ शारीरिक विकास ही होता है, जबकि सच यह है कि आउटडोर गेम्स से शारीरिक, विकास के साथ साथ उनका मानसिक विकास भी बहुत अच्छे तरीके से होता है। अतः बच्चों की इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए उन्हें खेल–कूद के लिए पर्याप्त समय दें। छोटे बच्चों को लाभदायक खेल जैसे रस्सी कूदना, झूला झूलना इत्यादि, आवश्यक रूप से खेलना चाहिए।

बच्चों द्वारा किये गये किसी भी अच्छे कार्य के लिए उनकी प्रशंसा करें। आपके द्वारा किये गये प्रशंसा के दो बोल उनके मन पर गहरा प्रभाव डालेंगे और भविष्य में वह और भी बेहतर कार्य करने हेतु प्रयास करेंगे। यदि बच्चों द्वारा किये गये कार्य में आपको कोई त्रुटियां नजर आएं तो उसकी त्रुटियों को नजरअंदाज़ न करते हुए उसे उन त्रुटियों के बारे में अवश्य बताएं, साथ ही उसमें से बेहतर प्वाइंट नोट करते हुए उसके लिए उसकी प्रशंसा भी अवश्य करें।

बच्चे को उसकी त्रुटियों को बताने का आपका ढंग ऐसा होना चाहिए कि बच्चे को यह न लगे कि आप उसकी आलोचना कर रहे हैं, बल्कि उसे ऐसा महसूस हो कि आप उसे कुछ सिखा रहे हैं। आपके द्वारा की गयी प्रशंसा से बच्चे को प्रोत्साहन मिलेगा। किसी भी कार्य में सफलता पाने हेतु प्रोत्साहन अच्छी भूमिका निभाता है, अतः बच्चे को आगे बढ़ने हेतु प्रोत्साहन अवश्य दें।

बच्चे के मानसिक विकास हेतु यह अत्यनत आवश्यक है कि आप उसकी प्रत्येक बात को महत्व दें। उसकी छोटी उम्र का तक़ाज़ा लगाकर यह न सोचें कि उसका क्या है, वह तो अभी बहुत छोटा है। आज के युग में छोटी उम्र में ही बच्चे काफी समझदार हो जाते हैं। यदि आप उसकी बात को महत्व नहीं देंगे तो वह भी आपको नकारना शुरू कर देगा और उसके मन में आपके प्रति सम्मान भी कम होगा।

यदि बच्चे उम्र से पूर्व ही परिपक्व हो रहे हों तो उन्हें उसी तरीक़े से 'हैंडिल' करने का प्रयास करें।

उनकी बातों को ध्यान से सुनें, उन पर मनन करें, फिर उत्तर दें। उसे हतोत्साहित कदापि न करें बल्कि उसकी छोटी से छोटी बात को भी इस प्रकार महत्व दें कि उसके आत्मविश्वास में वृद्धि हो।

## अनुरोध

अपने लेखकों से अनुरोध है कि वह पन्ने के एक ही ओर लिखा करें, स्वच्छ तथा सुन्दर लिखें और सरल भाषा में लिखें कि पाठक जन जहां आप के लेख पसन्द करते हैं वहीं कठिन लिखने की शिकायत भी करते हैं।

बाल गीत

## आंखें

दो आंखें हैं कितनी प्यारी,
जिनसे दिखती दुन्या सारी।
मम्मी दिखातीं, पापा दिखाते,
दिखाता नन्हा भैया प्यारा।
मोटर–गाड़ी, खेल–खिलौने,
दिखाता सूरज का उजियारा।
झील, नहर, नदियां दिखती हैं,
दिखाती हरी–भरी फुलवारी।
दो आंखें हैं जग से न्यारी,
जिनसे दिखाती दुन्या सारी।

## कान

दाएं–बाएं खड़े कान हैं,
पहरेदारों के समान हैं।
भले–बुरे का ज्ञान कराते,
खतरा भांप खड़े हो जाते।
कान खोल कर सुन लो भाई,
आपस में मत करो लड़ाई।
कान पकड़ना पड़े कभी ना,
कानाफूसी तुम ना करना।
भेद जानते सभी कान हैं,
पहरेदारों के समान हैं।

## नाक

नाक नहीं तो कैसे बोलो,
नाकों चने चबाते हम।
और नहीं फूलों की खुशबू,
से परिचित हो पाते हम।
नाक बिना चश्मा भी कैसे,
टिकता आंखों के ऊपर।
नाक हमारी शान बढ़ाती,
जमी हुई है चेहरे पर।

## पैर

दो पैरों पर हुआ खड़ा जब,
पैयां–पैयां चलना सीखा।
द्वारे देहरी लांघ चला जब,
छत के ऊपर चढ़ना सीखा।
जब स्कूल गया बस्ता ले,
क ख ग घ पढ़ना सीखा।
दो पैरों की बात निराली ।
जीवन–पथ पर पढ़ना सीखा।

रमेश आजाद।

# शीत–ऋतु

भानुदत्त त्रिपाठी

सदल शीत ऋतु आ गयी, सहम उठा संसार।
हिम–कोड़ा ले हाथ में बहने लगी बयार।।

देख–देखकर शीत का महा भयंकर रूप।
सरसों–सी पीली हुई चटक चुटीली धूप।।

दिन तो तिल जैसा हुआ, रात हो गयी ताड़।
हिम ने हाय, पहाड़ के कंपा दिये अब हाड़।

चेतन भी जड़–से हुए देख शीत के रंग।
रोम–रोम कहने लगा–करो आग का संग।।

किया धरा से शीत ने रात–रात भर प्यार।
गिरा टूटकर ओस की मुक्ताओं का हार।।

हिम–कोड़ा ले हाथ में बहने लगी बयार।
आओ सखि ! घर को चलें, सहन न होगी मार।।

पात–पात पर बैठकर चमक रही यों ओस।
मानो न्यौछावर किया नभ ने मुक्ता–कोष।।

भोर हुआ, लो–आप गयी बात–बात में शाम।
हाय, पूस ने लिख दिया समय शीत के नाम।।

सबल शीत के राज में सोलह दूनी आठ।
वैरागी भी रट रहे आग–राग का पाठ।।

शीतकाल ने यों लिखे निज यौवन के छन्द।
मेरे सम्मुख सूर्य की हुई बोलती बन्द।।

चादर कुहरे की तनी सरदी में सब ओर।
जाने कब सूरज उगा और हुआ कब भोर ।।

जड़–चेतन सब गा रहे हैं यूं सरदी का राग।
मांग रही है आग भी अब तो केवल आग।।

सरदी बेदरदी बड़ी करती नंगा नाच।
अब तो सबको चाहिए सब प्रकार की आंच।।

आह, शीत ! तू क्यों हुई ऐसी निर्मम–क्रूर।
गठरी बनकर रातभर पड़े रहे मजबूर ।।

सरदी में सब चाहते क्या दरिद्र क्या भूप।
प्रेम–पत्र–सी प्रिय लगे पूस–माघ की धूप।।

सरदी हुई जवान तो ठिठुरे जग के अंग।
रोम–रोम अब चाहता आग–राग का संग।।

अन्न न जिनके पेट में, नंगे जिनके गात।
घुटनों में शिर दाब कर उनक कटती रात।।

घिरा कुहासे का घना चारों ओर वितान।
दिन में भी दिखता नहीं दीप्तिमान दिनमान।।

मुफ्ती स० अब्दुर्रहीम लाजपुरी

# नातों और रिश्तों का महत्व

## कुर्आन और हदीस के प्रकाश में नाता जोड़ने की उत्तमता और प्रतिष्ठा तथा नाता तोड़ने पर चेतावनी।

प्रश्न : नातेदारों और रिश्तेदारों के साथ कैसे सम्बन्ध रखना चाहिए, कुर्आन और हदीस इस विषय में क्या आदेश देता है। विस्तार पूर्वक लिखये, प्रायः आजकल रिश्तेदारों में सम्बन्ध अच्छे नहीं हैं, छोटी छोटी बातों पर सम्बन्ध तोड़ दिये जाते हैं, सप्ताह दो सप्ताह नहीं वर्षों सलाम और बात चीत बन्द रखते हैं, क्या इस्लामिक दृष्टिकोण से ऐसा करना उचित है।

रिश्तदारों में परस्पर रंजिश के कारण आज घर घर अशान्ति है, घरों का सुख चैन समाप्त हो गया है। प्रत्येक मनुष्य दूसरे की त्रुटि निकालता है। कोई छोटा बनकर पहल करने के लिए तय्यार नहीं होता।

आशा है कि आप कुर्आन व हदीस के प्रकाश में इस महत्वपूर्ण विषय पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डालेंगे, इस प्रकार आप मानव समाज का मार्गदर्शन करेंगे। अल्लाह तआ़ला आप को दुन्या और आख़िरत में अच्छा बदला प्रदान करे।

उत्तर :– नातेदारों के अधिकारों को पूरा करना और उनके साथ सद्व्यवहार करने के विषय में कुर्आन और हदीस ने बहुत अधिक सावधान किया है, यदि कोई नातेदारी को जोड़ता हैऔर उचित ढंग से उस सम्बन्ध को स्थापित रखता है तो अल्लाह तआला की ओर से उस पर बड़े सवाब और पुण्य का वआदह है। इसके विपरीत दुर्व्यवहार पर कठोर दण्ड की चेतावनी है। रिश्तेदारों से सद्व्यवहार ऐसा मुबारक अैर पवित्र कार्य है कि इसकी बरकत से अल्लाह तआला जीविका में वृद्धि और उन्नति देता है। और आयु में वृद्धि और बरकत होती है। जैसा कि हदीस से आपको मालूम होगा। इन्सान कभी अपने माल से नातेदारों की सहायता करता है और कभी अपना समय उनके कामों में लगाता है तो इसके बदले में अल्लाह तआ़ला जीविका और माल में वृद्धि और आयु में बरकत और उन्नति देता है। जो उचित रूप से समझ में आता है। यह नाते का लौकिक लाभ है, पर लोक का सवाब और पुण्य अलग है, इसके विपरीत जब कोई नाता तोड़ता है और नातेदारी के अधिकार पूरे नहीं करता तो उसके कारण पारिवारिक झगड़े और घरेलू उलझनें खड़ी हो जाती हैं। हृदय की परेशानी और आन्तरिक घुटन उत्पन्न होती है। इसका प्रभाव कारोबार, स्वास्थ्य और जीवन के अन्य भागों पर पड़ता है हर समय मनुष्य व्याकुल और परेशान, जीवन में कोई आनन्द नहीं मिलता, कारोबार में कोई बरकत नहीं मालूम होती, यह दुन्या का घाटा है, परलोक, आख़िरत में जो प्रकोप और दण्ड है वह इसके अतिरिक्त होगा।

जिन नातेदारों के साथ कुर्आन और हदीस में अच्छा सम्बन्ध रखने का आदेश है उनके लिए प्रायः दो शब्द प्रयोग किये गए हैं।

(१) ज़विल अरहाम (२) ज़विल कुरबा इन दोनों में वह सम्पूर्ण नातेदार सम्मिलित हैं जिनसे वंश का सम्बन्ध है, चाहे वह सम्बन्ध पिता की ओर से हो या माता की ओर से, और चाहे वह सम्बन्ध कितना ही दूर का हो।

पिता की ओर से सम्बन्ध हो, जैसे दादा, परदादा, दादी, परदादी, भाई, भतेजे, भतीजी, और उनकी औलाद दर औलाद आख़िरत तक, बहन भांजा, भांजी और उनका पूर्ण वंश, चचा और उनकी औलाद दर औलाद, फूफी, उनकी औलाद दर औलाद, माता की ओर से सम्बन्ध हो जैसे नाना, परनाना, नानी परनानी, ख़ाला (मौसी) और उनकी औलाद दर औलाद मांमू और उनकी औलाद दर औलाद इत्यादि।

सद्व्यवहार के सर्वप्रथम योग्य माता पिता हैं इसके साथ सुसराली और दामादी नातेदारी को भी दृष्टि में रखना और उनके साथ अच्छा व्यवहार करना, तात्पर्य यह कि जिनसे किसी तरह की नातेदारी हो वह समीप, करीब के लोग हैं, नहीं तो वह दूर के लोग हैं।

तफ़सीर रूहुल मआनी ने सूरः निसा और सूरः मुहम्मद की आयतों के अर्थ में यही लिखा है –

पवित्र कुर्आन में अनेक स्थान पर इस का वर्णन किया गया है, कुछ आयतों का अनुवाद पढ़िये : और डरते रहो अल्लाह से जिसके माध्यम से सवाल करते हो आपस में और सावधान रहो नातेदारों से, सूरः निसा, ६–४।

यह आयत सिल–ए–रहिमी (नाता जोड़ने) के विषय में बहुत ही स्पष्ट है, बहुत ही खुलकर सुदृढ़ता के साथ सिल–ए–रहिमी (नाता जोड़ने) का आदेश दिया गया है–उपरोक्त आयत की व्याख्या करते हुए तफ़सीर उस्मानी में लिखा गया है :–

(अल्लाह से डरने के बाद) – तुम को यह आदेश दिया गया है कि नाते से डरो अर्थात नाते वालों के अधिकार पूरे करो, नाता तोड़ने और दुर्व्यवहार से बचो, समस्त मानव जाति के साथ सामान्यतः व्यवहार करना तो आयत के पहले भाग में आ चुका था, किन्तु नाते वालों के साथ निकटतम सम्बन्ध और एकता विशेष रूप से बढ़ा हुआ है, इसलिए उनके साथ दुर्व्यवहार करने से विशेषता से डराया गया है, उनके अधिकार अन्य लोगों से अधिक हैं। एक हदीसे क़ुदसी का अनुवाद इस प्रकार है: अल्लाह तआला फरमाता है, मैं अल्लाह हूं, मैं रहमान हूं, मैंने "रहिम" नातों को पैदा किया और मैंने शब्द "रहिम" को अपने नाम (रहमान) से निकाला है। बस जो व्यक्ति उसको मिलाएगा अर्थात नाता जोड़ेगा मैं उसको अपनी "रहमत" से मिलाऊंगा और जो व्यक्ति उसे काटेगा मैं उसको अपनी "रहमत" से काटूंगा, एक और हदीस अपनी "रहमत" से काटूंगा, एक और हदीस का अनुवाद इस प्रकार है : अल्लाह तआला ने प्राणि वर्ग को पैदा किया (अर्थात अल्लाह तआला ने समस्त प्राणि वर्ग को उनकी पैदाइश से पहले ही उन शक्लों के साथ अपने इल्म अज़ली (अनादि कालीन ज्ञान) में निश्चित कर दिया जिन पर वह पैदा होंगी) और जब उनसे निवृत्त हुआ तो "रहिम" अर्थात रिश्ता नाता खड़ा हुआ और पर्वर्दिगार (पालनहार) की कमर थाम ली, पर्वर्दिगार ने फरमाया "कह" क्या चाहता है? "रहिम" ने प्रार्थना किया कि काटे जाने के डर से तेरी शरण चाहिने वाले के खड़े होने का यह स्थान है (अर्थात तेरे सम्मुख खड़ा हूं तेरे आदर और सम्मान के स्थान पर प्रार्थना का हाथ फैलाए हूं और तुझ से इस बात की शरण चाहता हूं कि कोई व्यक्ति मुझको काट दे और मेरे दामन को जोड़ने की जगह उसको तार तार करदे) संसार के पालनहार ने फ़रमाया क्या तू इस पर राज़ी नहीं है कि जो व्यक्ति (रिश्तदारों और संबंन्धियों के साथ सद्व्यवहार द्वारा) तुझ को स्थापित रखे उसको मैं भी अपने पुरस्कार और कर्म फल द्वारा तुझ को स्थापित रखूं और जो व्यक्ति रिश्तेदारी और संबन्ध के अधिकार का हनन करके तुझ को काट दे मैं भी उस से अपना सम्बन्ध काट लूं। "रहिम" ने निदेवन किया, पर्वरदिगार (पालनहार) अवश्य मैं इस पर राज़ी हूं। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया अच्छा तो यह प्रतिज्ञा तेरे लिये स्थापित है। ऐसा ही होगा एक और हदीस का अनुवाद है : रहिम (रिश्ते, नाते) का शब्द रहमान से निकला है, अल्लाह तआ़ला ने रहिम से फ़रमाया जो व्यक्ति तुझ को जोड़ेगा, मैं भी उसको अपनी रहमत (करूणा) से जोडूंगा, जो तुझ को काटेगा, मैं भी उसको अपनी रहमत से पृथक करदूंगा। एक और हदीस का अनुवाद है :– रहिम अर्थात रिश्ता, नाता अर्श से लटका हुआ है और दुआ के रूप में कहता है जो मुझको मिलाएगा, उसको अल्लाह अपनी रहमत (करूणा) से जोड़ेंगे और जो मुझको तोड़ेगा, अल्लाह तआ़ला उसको अपनी रहमत (करूणा) से पृथक कर देगा। उपरोक्त हदीसें इस पर साक्षी हैं और संकेत करती हैं, कि अल्लाह और रसूल की दृष्टि में नाता जोड़ने की क्या विशेषता और उसका कितना महत्व है।

तफ़सीर मआ़रिफ कुर्आन में है :

"वलअरहाम" अर्थात रिश्ते के सम्बन्ध, पिता की ओर से हों अथवा माता की ओर से हों, उसकी रक्षा अनिवार्य है, उसमें कदापि लापरवाही न हो।

अनुवाद : गुफ़रान नदवी

(पृष्ठ ३६ का शेष)

पता था कि शासकों से सुकरात को कभी न्याय नहीं मिलेगा। अतः सुकरात के मित्रों ने उसे बचकर भाग निकलने या छिप जाने की प्रार्थना की। परन्तु सुकरात कायर नहीं था। वह जानता थाकि जिसे वह सही, उचित और सम्माननीय समझता था। वह न्यायालय में उपस्थित हुआ। उससे कहा गया कि वह अपना अपराध स्वीकार करे और क्षमा मांगे। इसके उत्तर में सुकरात ने एक सशक्त और शानदार भाषण दिया। उसने कहा–"यदि आप इस शर्त पर मुझे मुक्त करना चाहते हैं सौ बार भी मरनापड़े तो मैं तैयार हूं। अच्छे व्यक्ति का उसके जीवन में या मृत्यु के बाद कोई बुरा नहीं हो सकता।"

न्यायाधीश बड़े असमंजस में थे। तो भी उन्होंने उसे मृत्यु दण्ड सुना दिया। सुकरात के मित्र इस निर्णय को सुनकर शोक में डूब गये। बहुत से लोग तो यह सुनकर रोने लगे। परन्तु सुकरात उन्हें सांत्वना देता रहा। सुकरात तो इस दण्ड के लिए पहले से ही तैयार था। वह बिल्कुल विचलित नहीं हुआ। उसने परिवारी–जनों को उसने समझाया, और धीरज बंधाया।

उन दिनों एथेन्स में जब किसी को मृत्युदण्ड दिया जाता था तो उसे पीने के लिए जहर का प्याला दिया जाता था। सुकरात के सम्मुख भी जहर का प्याला पेश किया गया। उसने प्याला पी लिया और सदा के लिए संसार से विदा हो गया। सुकरात मरकर भी अमर हो गया। उसकी शिक्षा आज भी हमें सद्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे रही है।

●●●

# हकीम सुक़रात

लगभग २४०० वर्ष पूर्व यूनान के एथेन्स नगर में एक व्यक्ति की बहुत चर्चा थी। वह देखने में बहुत बदसूरत और नाटे कद का था। परन्तु एथेन्स के निवासी उसका बड़ा आदर करते थे। युवकों को अंधविश्वस से हटाकर सुमार्ग पर लाने के लिए वह दिन–रात घूमा करता था। उसे प्रतिदिन नगर की सड़कों पर युवकों से घिरा हुआ देख जा सकता था। उसे सत्य से असीम प्रेम था। सत्य की रक्षा के लिए उसने जहर का प्याला पिया था। वह व्यक्ति था–सुक़रात।

सुक़रात के पिता एक साधारण संगतराश थे और माता धाय (दाई) थी। उसकी प्रारम्भिक शिक्षा एक साधारण बालक की भांति ही हुई। अपनी आयु के अन्य बच्चों की भांति वह स्कूल जाता था जहां सबसे महत्वपूर्ण विषय संगीत व शारीरिक व्यायाम थे। उसने विज्ञान तथा गणित भी सीखा। उसने तारामंडल के विषय में भी ज्ञान प्राप्त किया। वह बहुत चिन्तनशील बालक था। वह हर समय अपने साथियों का अवलोकन करता रहता था। बहुत ही कम ऐसी बातें थीं जो उसकी दृष्टि से बच पाती थीं। बड़े होकर कुछ समय तक सुकरात एथेन्स की सेना में रहा। वहां उसने अपूर्व वीरता का परिचय दिया।

सुकरात एथेन्स को एक पूर्ण आदर्श राज्य देखना चाहता था। वह अपने अनुयायियों से कहा करता था कि ऐसा तभी हो सकता है जबकि प्रत्येक नागरिक अपने स्वचिन्तन की योग्यता का विकास कर सके। इससे वे यह जान सकते हैं कि क्या उचित, न्यायसंगत, सत्य और सुन्दर है। सुकरात कहा करता था कि किसी बात को केवल इसलिए स्वीकार न करो कि ऐसा बड़े लोगों ने कहा है स्वयं उसकी सत्यता की जांच करो। यदि यह पता चले कि वह सत्य है तभी उसको मानो और उसी के अनुसार अपना आचरण बनाओ।

सुकरात का विश्वास था कि प्रश्न पूछने और वाद–विवाद से सत्य की खोज में सहायता मिलेगी। इसी कारण वह हमेशा आम रास्तों पर खड़ा हो जाता था। आते–जाते लोगों को रोककर उनसे प्रश्न पूछता। लोगों के निरुत्तर होने पर प्रश्नों के उत्तर भी स्वयं देता। तब लोगों की समझ में आता था कि उनका ज्ञान कितना कम है। सुकरात खूब समझा कर उनसे वह सत्य कहलवा लेता था जो वह उन्हें बताना चाहताथा। इस प्रकार उसने चारों ओर ज्ञान का प्रकाश फैला दिया।

सुकरात का यह भी विश्वास था कि मनुष्य स्वभाव से बुरा नहीं होता। वह अपने अज्ञान के कारण बुरे काम कर बैठता है यदि उसका अज्ञान दूर हो जाय और वह सत्य को जान जाये तो वह अच्छा और सुखी मनुष्य बन जायेगा। उसने यह निश्चय किया कि एथेन्सवासियों के जीवन को सुखी बनाने में वह उनकी सहायता करेगा।

सुकरात को धन–वैभव या प्रसिद्धि की कोई लालसा नहीं थी। जैसे–जैसे वह बड़ा होता गया उसने अपने शारीरिक आराम और सुख की ओर सोचना बिल्कुल बन्द कर दिया। वह सारे कार्य छोड़कर सत्य और श्रेष्ठ जीवन की खोज में लगा रहा। एक बार वह यूनान की कौंसिल का सदस्य भी बना। वही एक सदस्य था जिसने कौंसिल में अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाई। उसने कभी अपनी आत्मा के विरुद्ध आचरण नही किया।

सुकरात का शिक्षा देने का ढंग इतना सरल और प्रभावपूर्ण था कि थोड़े ही समय में उसके समर्थकों की संख्या बहुत बढ़ गई। उसकी ख्याति दूर–दूर तक फैलगई युवक और वृद्ध, धनी और निर्धन, कवि और दार्शनिक सभी उसका अनुसरण कर अपने को धन्य मानते थे।

परन्तु एथेन्स के शासकों को यह अच्छा नहीं लगा। उन्हें उसके बढ़ते हुए प्रभाव से डर लगने लगा। वे उससे ईर्ष्या करते थे। उन्होंने उसे चुप करने का निश्चय किया। उन्होंने सुकरात पर आरोप लगाया कि वह एथेन्स के देवी देवताओं में आस्था नहीं रखता और देश के नवयुवकों को गलतरात पर लेजा रहा है। वह प्रश्न करके उनके मस्तिष्क में प्राचीन विश्वासों के प्रति सन्देह भर रहा है। वह उन्हें अपने बड़े–बूढ़ों की अवज्ञा सिखा रहा है तथा लोगों को विद्रोह करने के लिए उकसा रहा है। उस पर अभियोग चलाया गया।

सभी जानते थे कि अभियोग बिल्कुल झूठा हैं लेकिन उन्हें यह भी

(शेष पृष्ठ ३८ पर)

# मदरसों का उद्देश्य और उनकी शिक्षा

मुहम्मद सरवर फारूकी नदवी

हमारा देश तो आज़ाद हो गया जिसे कभी अंग्रेज़ों ने अपनी चतुरता से इसे गुलाम बना रखा था परन्तु आज भी शिक्षा व्यवस्था, उद्योग–धंधे, व्यापार, राजनीति, अर्थव्यवस्था, इतिहास, सभ्यता एवं संस्कृति, उन्नति एवं विकास आदि सभी क्षेत्रों में उनके प्रभाव महसूस किये जा सकते हैं।

शिक्षा व्यवस्था जो किसी भी देश की संस्कृति और उन्नति का आधार होती है, आज भी अंग्रेज़ों के द्वारा बनाई गई शिक्षा व्यवस्था की गुलामी से छुटकारा नहीं पा सकी है। यही कारण है कि आज़ादी को मिले ५६ वर्ष बीत जाने के बाद भी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अंग्रेज़ों की छाप दिखाई देती है। जो शिक्षा व्यवस्था लागू हुई आमतौर पर धार्मिक शिक्षा को उससे दूर रखा गया अंग्रेज़ों ने, (जो धर्म से ईसाई थे) अपनी धार्मिक शिक्षा के लिए इतनी अच्छी व्यवस्था कर रखी थी कि उन्हें इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता था सरकारी पाठ्यक्रमों में क्या पढ़ाया जा रहा है। उन्होंने इसके लिये चर्चों को बड़ी–बड़ी जागीरें दी और चर्चों का काम बड़े सुव्यवस्थित ढंग से चल रहा था। आज तक जहां उनके स्कूल हैं बड़ी बड़ी जमीनें मौजूद हैं।

इस पर मुसलमानों के तो उलमा को बड़ी फिक हुई और उन्होंने धर्मिक शिक्षा के लिए निजी दीनी मदरसों का प्रबन्ध किया, छोटे मदरसे भी खोले और बड़े दीनी इदारे भी क़ायम किये जिनमें दुन्या के विभिन्न क्षेत्रों के लोग आकर धार्मिक शिक्षा प्राप्त करते हैं।

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य इन्सान को इन्सान बनाना होता है अर्थात इन्सान यह समझ सके कि मेरे पैदा करने वाले मालिक का क्या अधिकार है और जिस समाज में वह रह रहा है उसमें लोगों के क्या अधिकार हैं, और अपनी जीवन व्यवस्था को कैसे सुधार कर स्वस्थ समाज बना सके। हमारे दीनी मदरसों में एक विषय होता है जिसका नाम है "फ़िक़्ह" जिसमें एक दूसरे के हुकूक बताए जाते हैं कि अपने पैदा करने वाले का क्या हक़ है और इन्सानों को क्या हुकूक हैं इसी लिए हमारे मदरसों के पाठ्यक्रम का जो मुख्य उद्देश्य है, वह यह कि हमारे विद्यार्थी समझें कि हर इन्सान, चाहे वह हमारे अपने देश वतन का हो या किसी दूसरे देश और वतन का, हमारी क़ौम का हो या किसी दूसरी कौम का, मुसलमान हो या गैर मुस्लिम, किसी जंगल का रहने वाला हो या किसी रेगिस्तान में पाया जाता हो। बहरहाल केवल इन्सान होने की हैसियत से उसके कुछ हक़ हैं जिनको एक मुसलमान लाज़िमी तौर पर अदा करेगा यह उसका फर्ज़ है। जिसे कुर्आन में इस प्रकार फ़रमाया गया।

"किसी जान को हक़ केबिना कत्ल न करो, जिसे अल्लाह ने हराम किया है (६:१५२)

इसी प्रकार अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने किसी जान के क़त्ल को शिर्क के बाद सबसे बड़ा गुनाह बताया है।

इसी प्रकार उसकी सुरक्षा की व्यवस्था भी की जाय और सहायता भी जैसे एक आदमी बीमार या ज़ख्मी है यह देखे बिना कि वह किस नस्ल किस क़ौम या किस रंग का है अगर वह आप को बीमारी की हालत में या जख्मी होने की हालत में मिला है तो आपका काम यह है कि उसकी बीमारी या उसके ज़ख्म के इलाज की फिक्र करें, अगर वह भूखा है तो आप का काम यह है कि उसको खिलाएं अगर वह डूब रहा है और किसी तरह उसकी जान खतरे में है तो आप का फर्ज़ है कि उसको बचाएं।

इसी प्रकार कुर्आन में यह भी हुक्म दिया गया कि और मुसलमानों के मालों में मांगने वाले और महरूम रह जाने वाले का हक़ है"(५:१६)

इस आयत में मदद करने को किसी धर्म विशेष के साथ खास नहीं किया गया। फिर यह हुक्म मक्के में दिया गया था, जहां मुस्लिम समाज का बाक़ायदा कोई समाज न था। अतः मालूम यह हुआ कि मुसलमान के माल में हर मदद मंगाने और हर तंगदस्त और महरूम रह जाने वाले इन्सान का हक़ है। हर गिज़ नहीं देखा जाएगा कि वह अपनी क़ौम या अपने देश का है या किसी दूसरी क़ौम, देश का नस्ल से उसका सम्बन्ध है। आप हैसियत रखते हों और कोई ज़रूरत मंद आपके मदद मांगे, या आप को मालूम हो जाये कि वह ज़रूरत मंद है तो ज़रूर उसकी मदद करें।

●●●